डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

विश्व का श्रेष्ठ, अछूता
एवं सर्वोत्कृष्ट दुर्लभ ग्रंथ,
जिसमें सिद्धाश्रम पहुंचने का सांगोपांग विवरण-वर्णन

समुद्र मंथनं पश्चात्
कल्पवृक्षत्व दुर्लभं।
सिद्धाश्रमत्व स्थापित्वं
कामधेनुस्तथैव च।।

गुरु मूर्ति सदा ध्यायेत गुरु मंत्र सदा जपेत

. . . शिष्य के जीवन की पूर्णता ही नहीं उसके जीवन का प्रारम्भ भी होता है – गुरु ! तो क्यों न प्रत्येक दिवस प्रारम्भ हो गुरुदेव के पुण्य स्मरण से . . . इसी चेतना को जाग्रत करने, स्पष्ट करने व शिष्य के जीवन में उतार देने हेतु ही तो सृजित की गई है ये कृतियां . . .

तांत्रोक्त गुरु पूजन

अपने हृदय में गुरु स्थापन करना समस्त देवताओं कि स्थापन करने से ज्यादा महत्वपूर्ण है। ऋग्वेद और एक सामान्य व्यक्ति किस प्रकार से गुरु को अपने हृदय में स्थापित कर अपने जीवन में स्थापित कर सकता है, प्रस्तुत ग्रंथ में वैदिक, तांत्रोक्त, तिब्बती तथा अन्य विधियों से गुरु को जीवन में समाहितिकरण की क्रिया की गई है। *न्यौछावर 30/-*

दैनिक साधना विधि

व्यक्ति किस प्रकार से नित्य पूजन कर्म करें, साधनामय दिशा की ओर कौन सी पूजन विधि प्रातः काल के लिए उपयोगी है, श्रेष्ठतम है, इसी विधान सहित प्रस्तुत किया गया है इसमें . . . *न्यौछावर 30/-*

ज्योतिष और काल निर्णय

समय के सूक्ष्म से सूक्ष्म प्रभाव को ज्ञात किया जा सकता है और उसके अनुसार कार्य की सफलता को निश्चित किया जा सकता है . . . वराहमिहिर के ही ग्रंथ को आधार बनाकर रचित किया गया है यह ग्रंथ

न्यौछावर 150/-

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर फोन : 0291-432209, फैक्स : 0291-432010

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली फोन : 011-7182248, फैक्स : 011-7196700

सिद्धाश्रम

आशीर्वाद

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

एस-सीरीज

संकलन - सम्पादन
श्री अरविन्द श्रीमाली

प्रकाशक
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ0 श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
फोन : 0291-2432209, 2433623 फैक्स : 0291-2432010

संस्करण	:	जनवरी 2005
प्रति	:	3000
मूल्य	:	15/-
मुद्रक	:	सुदर्शन प्रिन्टर्स, 487/505, पीरागढ़ी, दिल्ली-87 फोन : 25258019

शब्द ब्रह्म है और वेदों से लगा कर आज तक सभी योगियों, ऋषियों, महर्षियों और संतों ने उन्हीं शब्दों का प्रयोग अपने-अपने तरीके से किया है, जिन शब्दों का प्रयोग वेदों और उपनिषदों में किया गया है, उन्हीं शब्दों का प्रयोग मीरा, कबीर, तुलसी और रैदास ने भी किया है, क्योंकि शब्द तो शाश्वत है।

यदि किसी भी व्यक्ति या महापुरुष के शब्दों और भावों से पुस्तक में वर्णित शब्दों और भावों का साम्य दिखाई दे या अनुभव होने लगे, तो यह एक संयोग है। मैं उन सभी ज्ञात-अज्ञात महापुरुषों के शब्दों का, भावों का और उनके विचारों का ऋणी हूं, क्योंकि उन सभी के साहित्य और भावों का मेरे चित्त पर गहरा असर रहा है।
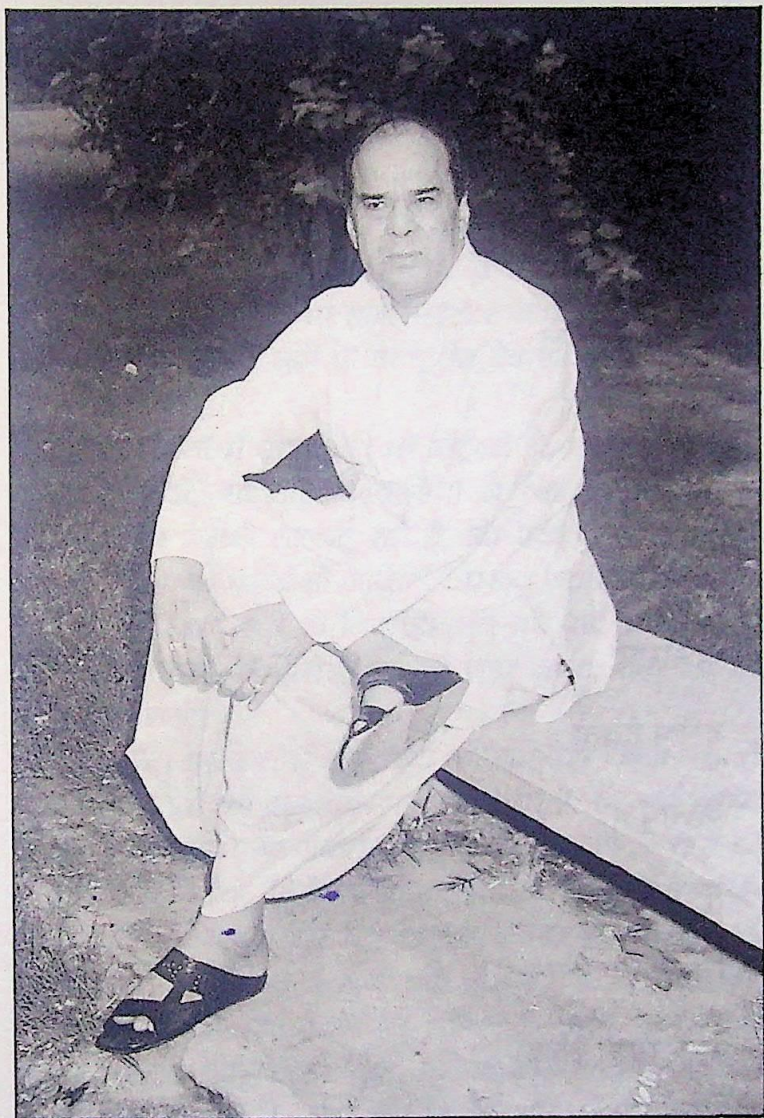
पूज्य गुरुदेव

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

अनुक्रमणिका

पुरोवाक्

इस ब्रह्माण्ड में यदि कुछ अद्‌भुत है, आश्चर्यजनक है, तेजस्विता युक्त है, सप्राण है, पूर्णता से सराबोर है, तो वह सिद्धाश्रम है। इस ब्रह्माण्ड में यदि कहीं देवताओं का वास है, कल्पवृक्ष है, कामधेनु है, अप्सराएं हैं, किन्नरियां हैं, ब्रह्मा, विष्णु और महेश हैं, जिनके लिए हजार-हजार साधनाएं की जाती हैं और फिर भी वे प्राप्त नहीं हो पाते, उन देवताओं को देखने का स्थल सिद्धाश्रम है।

कई ग्रंथों में उच्चकोटि के विद्वानों ने, श्रेष्ठतम योगियों, यतियों, मुनियों, साधुओं, संन्यासियों ने सिद्धाश्रम का वर्णन किया है और उनकी लालसा रही है, कि एक बार-केवल एक बार सिद्धाश्रम का दर्शन हो जाये . . . परन्तु यह वैसा ही कठिन है, जैसा कि एक चींटी के लिए हिमालय को पार करना, जैसा कि एक छोटी मछली द्वारा समुद्र को लांघ जाना, एक बूंद का समुद्र बन जाना।

परन्तु इस ग्रंथ में उन तथ्यों का समावेश किया गया है, उन सरल उपायों का स्पष्टीकरण किया गया है, जिसके माध्यम से व्यक्ति सिद्धाश्रम जा सकता है। एक सिद्ध योगी के द्वारा इन श्लोकों की व्याख्या, विवेचना और अर्थ प्राप्त कर मैंने इस ग्रंथ में सम्पादित किया है और मैंने अनुभव किया है, कि यह ग्रंथ मनुष्य जाति के लिए युगों-युगों तक एक दीप स्तम्भ की भांति होगा, जिसके प्रकाश में वे उस भूमि तक पहुंच सकेंगे और निश्चय ही जो योगियों, ऋषियों, मुनियों के लिए भी दुर्लभ रहा है, उसको आसानी से प्राप्त कर सकेंगे और जीवन को धन्य कर सकेंगे।

—अरविन्द श्रीमाली

सिद्धाश्रम

सिद्धाश्रमः पुण्य क्षेत्रं विज्ञानेनापि दृश्यते।
पुण्यभूमि दिव्य क्षेत्रं देवानामपि दुर्लभम्।।

वास्तव में ही इस पृथ्वी पर जितने भी तीर्थ हैं, नदियां हैं, समुद्र हैं, पुण्य क्षेत्र हैं और योगियों के लिए भी जो दुर्लभ स्थल हैं, उन सबमें कई गुना उच्चस्तर का क्षेत्र सिद्धाश्रम है, जो कि योगियों को क्या, देवताओं के लिए भी दुर्लभ है। देवता भी इस सिद्धाश्रम में जाने के लिए तरसते रहते हैं, क्योंकि यह पुण्य क्षेत्र है, यह कर्म क्षेत्र है, यह धर्म क्षेत्र है, यह अगम्य है, यह अगोचर है।

विज्ञान इसको नहीं देख सकता, वायुयान के माध्यम से इसके चित्र नहीं लिये जा सकते, सूक्ष्म से सूक्ष्म कैमरा भी सिद्धाश्रम का चित्र अपने में समाहित नहीं कर सकता, क्योंकि सिद्धाश्रम के चारों ओर सुदर्शन चक्र बराबर गतिशील है, जिससे कि बाहर का कोई भी तत्त्व उससे टकरा कर वापिस लौट जाता है और सिद्धाश्रम को देखना या उसका चित्र लेना या उसमें प्रवेश पाना दुर्लभ है, सही शब्दों में कहा जाय, तो असम्भव है।

वास्तव में ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में, चाहे वह विष्णु लोक हो, चाहे इन्द्र लोक हो, चाहे रुद्र लोक हो, चाहे कैलाश हो, चाहे ब्रह्म लोक हो सभी लोकों में, समस्त ब्रह्माण्ड में इसके समान अन्य कोई स्थान नहीं है।

यह भारतवर्ष का सौभाग्य है, कि भारतवर्ष की धरती पर ऐसा एक अद्वितीय सिद्धाश्रम स्थापित है, जिसकी तुलना हजार-हजार ब्रह्माण्ड मिल कर भी नहीं कर सकते।

वास्तव में ही वहां प्रवेश पाना अत्यन्त कठिन है, जो अत्यन्त उच्चकोटि की साधना सम्पन्न करने में समर्थ होता है और सैकड़ों वर्ष साधनाओं में व्यतीत करता है, तब कहीं जा कर वह सिद्धाश्रम में जाने अथवा प्रवेश करने के योग्य होता है और इसके बाद भी केवल गुरु कृपा से ही उस सिद्धाश्रम में जाना सम्भव हो सकता है और वह भी ऐसा गुरु, जो स्वयं सिद्धाश्रम गया हुआ हो, जो सिद्धाश्रम जा सकता हो और वहां से वापिस आ सकता हो अन्यथा

उच्चकोटि के योगी, यति या संन्यासी के वश की भी बात नहीं है, कि वह किसी अन्य व्यक्ति को सिद्धाश्रम में ले जा सके।

केवल मात्र एक ही कसौटी है, कि जो पहले सिद्धाश्रम में प्रवेश पा चुका हो और जिसे इस विद्या का ज्ञान हो, कि सिद्धाश्रम में कैसे जाते हैं और वापिस इस पृथ्वी पर कैसे आ सकते हैं, किस तरीके से सिद्धाश्रम में गमन कर सकते हैं, क्योंकि मानसरोवर और कैलास पर्वत से भी कई सौ मील दूर यह पुण्य क्षेत्र 'सिद्धाश्रम' है; चल कर वहां जाना मनुष्य के वश की बात नहीं है।

वहां पर जाने के लिए तो, जो अणिमादि सिद्धियों के माध्यम से अत्यन्त लघु और सूक्ष्म बना कर वायु वेग से आकाश गमन कर सकता हो, वही सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सकता है और उससे भी उच्चकोटि का ब्रह्म वर्चस्व जिसने प्राप्त कर लिया हो, वह अपने साथ किसी भी अन्य को अपनी इच्छा के अनुरूप और सिद्धाश्रम के संकेत पर ले जा सकता है और वहां जा कर वापिस लौट सकता है। वहां जाने पर शरीर अपने आप ही अंगुष्ठ से पूर्ण वैसा ही बन जाता है, जैसा यहां पर है अर्थात् वहां जा कर वापिस पूर्ण पुरुष बन जाता है तथा वहां से वापिस यहां अपने स्थान पर शरीर को अंगुष्ठ रूप बना कर तीव्र वेग से कुछ ही क्षणों में आ कर पुनः वैसी ही देह धारण करने की सिद्धि जो प्राप्त कर चुका है, वही सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सकता है, जा सकता है और आ सकता है।

वास्तव में ही करोड़ों-करोड़ों योगियों, यतियों, संन्यासियों में से किसी एक के भाग्य में ही स्वर्णाक्षरों में यह लिखा गया होता है, कि वह उच्चकोटि के गुरु के सम्पर्क में गतिशील हो और उसे ऐसे समर्थ गुरु की कृपा दृष्टि प्राप्त हो; वह गुरु अपने साथ उस शिष्य को ले जा सके और वहां पर उसे पुनः पूर्ण शरीर प्रदान कर सके और ठीक उसी प्रकार वहां से वापिस लौटते समय उसे अंगुष्ठ रूप बना कर इस पृथ्वी पर अपने स्थान पर ला सके और पुनः पूर्ण पुरुष बना कर खड़ा कर सके।

वास्तव में ही ऐसा सिद्धाश्रम जीवन का सौभाग्य है, अद्वितीय है, हजार-हजार विज्ञान मिल कर अभी हजारों वर्षों के बाद भी इस स्थान की

महत्ता को न अनुभव कर सकते हैं, न देख सकते हैं, न परख सकते हैं, न पहिचान कर सकते हैं और हजार-हजार वर्षों तक मनुष्य जाति भी इस सिद्धाश्रम में न जा सकती है, न देख सकती है।

यह तो कोई बिरला ही होता है, जिसे ऐसा समर्थ गुरु मिल जाय, जो स्वयं सिद्धाश्रम गया हुआ हो, वापिस आने की सामर्थ्य रखता हो और उससे भी बढ़ कर अपने शिष्य को ले ज़ाने और लाने की क्षमता रखता हो, वही अपने शिष्य को वहां ले जा कर उसके दर्शन करा सकता है।

ऐसे शिष्य के सौभाग्य पर तो विधाता स्वयं ईर्ष्या करता है, देवता स्वयं दांतों तले उंगली दबा लेते हैं और उसका सारा व्यक्तित्व अपने आपमें स्वर्णिम, अद्वितीय तथा अनुपम बन जाता है।

अद्वितीय स्थल

जिह्वां न कथ्यते श्रुत्वं योगिनामपि दुर्लभम्।
एकोपि सर्व ब्रह्माण्ड एकमेव वदेत् सदा।।

गुरुदेव! यह जीभ कुछ नहीं कह सकती, जीभ में इतनी ताकत ही नहीं है, कि वह आपका वर्णन कर सके, जिह्वा में इतनी क्षमता नहीं है, कि आपके बारे में कुछ कह सके, शब्दों में इतनी सामर्थ्यता नहीं है, कि वह आपकी चेतना को बांध सके। सारे संसार के शास्त्र मिल करके भी आपका वर्णन नहीं कर सकते और अंत में केवल एक ही शब्द बच जाता है – नेति! नेति!!

–अर्थात् इसके आगे अब कुछ भी कहना सम्भव नहीं है। जब जीभ नहीं कह सकती, तो फिर सारे शरीर में हजारों रोम हैं, ये यदि जीभ बन जायें, तब भी आपके सौन्दर्य का, आपकी साधुता का, आपकी साधनाओं का, आपकी दिव्यता का, आपकी तेजस्विता का वर्णन नहीं किया जा सकता।

एक नहीं, कई-कई योगी आपका वर्णन करते-करते थक गए, कई साधु आपके शरीर का आकलन करते-करते चुक गए, कई योगी आपके बारे में कहते-कहते मौन हो गए, कई संन्यासी आपको देख करके चुप हो गए, विधाता भी आपके स्वरूप को, आपकी तेजस्विता को अपने शब्दों में नहीं बांध सका। फिर हम तो एक सामान्य सांसारिक व्यक्तित्व हैं। हम किस प्रकार से आपका वर्णन कर सकते हैं? हम किस प्रकार से सिद्धाश्रम की विवेचना कर सकते हैं?

– क्योंकि आप और सिद्धाश्रम दोनों एक-दूसरे के पर्याय हैं, न आपका वर्णन किया जा सकता है, न सिद्धाश्रम का वर्णन किया जा सकता है। आपको प्राप्त करना कठिन है, सिद्धाश्रम को भी प्राप्त करना कठिन है। आप अद्वितीय हैं, सिद्धाश्रम भी अद्वितीय हैं।

आप योगियों में श्रेष्ठ हैं, सिद्धाश्रम भी योगियों में उच्च स्तरीय है। आप जो सहज-सुलभ प्रतीत होते हैं, वह तो एक माया का आवरण लिये हुए

व्यक्तित्व है, जिसको भेदना अत्यन्त कठिन है। उच्चकोटि के योगी भी जिनको भेद नहीं पाये, उच्चकोटि के योगी भी जिनको समझ नहीं पाये, हम सामान्य मनुष्य क्या समझ सकते हैं? हम तो मात्र जिस प्रकार से एक बच्चा रो सकता है, उसी प्रकार से रो सकते हैं, तुतलाती हुई भाषा में बोल सकते हैं, मगर शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते . . . और यह सम्भव भी नहीं है।

आप समस्त ब्रह्माण्ड में समाये हुए हैं, हवा आपके संकेत पर बहती है, पवन आपके संकेत पर सुगन्ध लिये घूमता है, वसन्त आपकी भृकुटि को देख कर लहराता है, आकाश में इन्द्रधनुष आपका ही नाम अंकित करता है, वर्षा की बूंदें आपके द्वारा इस पृथ्वी तल पर विचरण करती हैं, मेघ गर्जन करता हुआ आपकी महिमा का ही वर्णन करता है, आकाश आपके ही विस्तार को अपनी बाहों में समेटने के लिए आतुर है, धरती आपके चरणों से लिपट कर अपने आपको धन्य अनुभव करती है और सारा ब्रह्माण्ड आपको बराबर निहारता रहता है।

वास्तव में ही आप अनेक में एक हैं, एक में अनेक हैं। जब योगी भी इसको नहीं समझ पाये, तो हम सामान्य व्यक्ति क्या समझ पायेंगे? हम तो अत्यन्त ही सामान्य, क्षुद्र, तुच्छ व्यक्ति हैं, जो घमंड के मारे अपने आपको साधक कह देते हैं, शिष्य कह देते हैं। मगर हम जानते हैं, कि हममें वह पात्रता नहीं है, वह दिव्यता नहीं है, जो होनी चाहिए। शिष्य एक अलग शब्द है। वह पात्रता हममें कब आ पायेगी – हमें कुछ नहीं पता।

इस शताब्दी ने आपका नाम पूरे ब्रह्माण्ड में लिख दिया है, इस शताब्दी ने आपका गुणगान किया है, इस शताब्दी ने आपसे स्पर्श की हुई वायु को पूरे विश्व में फैलाया है, इस शताब्दी ने आपको पा कर अपने आपको गौरवान्वित अनुभव किया है और इसीलिए यह शताब्दी मुस्कुरा रही है, क्योंकि आपके द्वारा युद्ध की विभीषिका पर विजय प्राप्त किया गया है, आपकी वजह से ही शांति स्थापित है, आपकी वजह से युद्ध की अग्नि भड़कने में न्यूनता आ रही है, आपकी वजह से ही पाप कम हो रहे हैं, आपकी वजह से ही अधर्म पर धर्म की स्थापना हो रही है, आपकी वजह से अंधकार में प्रकाश की किरणें बिखर रही हैं।

वास्तव में ही यह शताब्दी और आने वाली कई शताब्दियां आपका गुणगान करती रहेंगी। गई हुई शताब्दियां आपको एहसास करेंगी और हम कितने सौभाग्यशाली हैं, कि आपको सशरीर देख रहे हैं, स्पर्श कर रहे हैं, आपके चरणों का स्पन्दन अनुभव कर रहे हैं और आपसे स्पर्श पा कर जो हवा आती है, उसको नथुनों में भर कर शरीर में समाहित कर रहे हैं।

हम छोटे-छोटे बच्चे हैं, उंगली पकड़े हुए, तुतलाते हुए, गिरते-पड़ते बढ़ते हुए, मगर हमें विश्वास है, कि आपने हमारी उंगली पकड़ रखी है, तो एक दिन जरूर हाथ पकड़ लेंगे, एक दिन जरूर साथ ले चलेंगे।

—एक दिन जरूर हमारे ऊपर से माया का पर्दा हटा देंगे, एक दिन जरूर विराट रूप का दर्शन करा सकेंगे, एक दिन जरूर हमारे जीवन को धन्य कर सकेंगे, एक दिन जरूर हम गौरवान्वित हो सकेंगे।

—एक दिन जरूर हम सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सकेंगे, एक दिन जरूर हम वहां ऋषियों, योगियों, यतियों, मुनियों के दर्शन कर सकेंगे।

—एक दिन जरूर अप्सराओं की अठखेलियां देख सकेंगे, एक दिन जरूर सिद्धयोगा झील में स्नान कर सकेंगे।

—एक दिन जरूर परम गुरुदेव परमहंस स्वामी सच्चिदानन्द जी के दर्शन कर सकेंगे, ऐसा हमें विश्वास है।

प्रभु! हमारे विश्वास को ठेस न लगने दें, क्योंकि मृत्यु का झपट्टा हम पर आक्रमण कर रहा है और किसी भी समय हम उसके झपट्टे में आ सकते हैं। लाखों लोग श्मशान की यात्रा कर रहे हैं और हम अनुभव नहीं कर पा रहे हैं।

हम आपको समझ नहीं पा रहे हैं। आपके जैसे विराट पुञ्ज को कैसे समझ पायें? हमारी आंखों में उतनी ताकत नहीं है, हमारे प्राणों में उतना सञ्चार नहीं है . . .

—फिर भी एक एहसास है, कि आप हैं, हमारे पास हैं और अपनी शिष्यता प्रदान किये हुए हैं। हम भी टूटे-फूटे शब्दों में ही सही, गुरु मंत्र का उच्चारण तो कर ही रहे हैं।

—एक बार, केवल एक बार करुणा से हमारी ओर देख लीजिए,

केवल एक बार अपना वरदहस्त हमारे सिर पर रख दीजिए, केवल एक बार हमारा सिर अपने चरणों में रखने दीजिए, केवल एक बार अपने आपको आपके प्रति न्यौछावर हो जाने दीजिए, केवल एक बार हमें पूर्णता प्रदान कर दीजिए, केवल एक बार हमें सिद्धाश्रम की ओर ले जाइये . . .

—बस इतनी ही कातर प्रार्थना है, हमारी आंसुओं से भरी हुई आंखें बस इतना ही कहना चाहती हैं, हमारे थरथराते होंठ मात्र इतना ही व्यक्त करना चाहते हैं, कि हे गुरुदेव! एक बार हमें सिद्धाश्रम के दर्शन करवा दें, एक बार आप हमें शिष्य कह दें, हमें इसके अलावा और कुछ नहीं चाहिए।

गुरुदेव

सिद्धाश्रम गमनं चैव अति दुर्लभ योगिनः।
एकमेव गुरौ त्वं वै आवागमन शीघ्रतः।।

गुरुदेव! मैं इस बात को अच्छी तरह जानता हूं, कि सिद्धाश्रम में जाना दुर्लभ है या सही अर्थों में कहा जाय, तो असम्भव है। परन्तु मैं यह भी जानता हूं, कि इस समय इस पृथ्वी पर ऐसा कोई भी योगी, यति या संन्यासी नहीं है, जो सिद्धाश्रम में गमन कर सके। हिमालय में भी शायद ही कोई योगी बचा हो, जो सिद्धाश्रम में प्रवेश करने की क्षमता, सामर्थ्य और सिद्धि युक्त हो।

मैं यह भी जानता हूं, कि इतनी उच्चकोटि की साधनाएं तो पांच-दस हजार वर्षों तक करने पर भी सम्भव नहीं हो सकता, कि वह सिद्धाश्रम जा सके और इतनी बड़ी उम्र मनुष्य जाति के पास इस समय नहीं है। अतः यह लगभग असम्भव है, कि व्यक्ति सिद्धाश्रम में जा कर इस अद्वितीय स्थल के दर्शन कर सके, जहां की धूलि चंदन की तरह मस्तिष्क पर, ललाट पर लगाने के योग्य है, जहां की वायु अपने आपमें अष्टगंध से युक्त है, जहां के पुष्प कभी मुरझाते नहीं हैं, जहां न रात होती है, न धूप होती है, ऐसा स्वर्णिम प्रभात होता है, जैसा सूर्योदय के पश्चात् चारों तरफ लालिमा युक्त यह संसार दिखाई देता है, जहां के कण-कण में तपस्या के अंश आपूरित हैं, जहां खड़े रहना अपने आपमें सौभाग्य युक्त है, जिसका नाम लेने से ही शरीर पुलकित, पवित्र और दिव्य बन जाता है, जो भूमि स्पन्दन युक्त और चेतना युक्त है, जो दिव्य और देव दुर्लभ है।

और मैं यह भी जानता हूं, कि इस समय जहां तक मेरी जानकारी है, जहां तक मैंने सुना है, जहां तक मेरा अनुभव है, वहां तक केवल आप ही एक युगपुरुष बचे हैं, जो अपने शिष्यों पर माया डाल कर अपने से अलग कर लेते हैं और स्वयं अत्यन्त सामान्य धोती-कुर्ता पहिने हुए प्रतीत होते हैं। पता ही नहीं चलता, कि इस धोती-कुर्ते के अन्दर एक ऐसा विराट व्यक्तित्व समाहित है, जिसके शरीर से निरन्तर अष्टगंध प्रवाहित होती रहती है, जिसकी आंखों

में अथाह करुणा है, जिसके वक्षस्थल पर कौस्तुभ है, जिसके ललाट पर त्रिवली शोभायमान है, जिसकी जिह्वा पर साक्षात् सरस्वती विराजमान है, जिसके हृदय में हजारों-हजारों शास्त्र, वेद समाहित हैं, जिसका सारा शरीर तपस्या से कुन्दन की तरह दमक रहा है, जो सामान्य दिखते हुए भी अद्वितीय हैं, सरल अनुभव होते हुए भी अप्रतिमेय हैं।

जो भी उनके सम्पर्क में आता है, एक क्षण में उसे माया में आपूरित कर देते हैं और वह भ्रमित हो जाता है और जो कुछ कहना चाहता है, जो कुछ अनुभव करना चाहता है, वह भूल जाता है और अपनी ही व्यथा, अपना ही दु:ख, अपनी ही वेदना कह कर शांत हो जाता है, ऐसा प्रतीत होता है, जैसे समुद्र के किनारे बैठ कर घोंघे और कंकर-पत्थर चुन रहा हो।

वास्तव में ही आपके समान अन्य कोई भी इस पृथ्वी पर इस समय नहीं है, जो सिद्धाश्रम वायु वेग से जा सकता हो और लौट सकता हो, यही नहीं, अपने साथ भी किसी शिष्य या शिष्या को ले जा सकता हो और ले कर आ सकता हो। आपमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसी विषय-वासनाएं हैं ही नहीं, आप उनसे ऊपर उठ कर हैं।

—मैं नहीं समझता, कि यह युग आपको कब पहिचानेगा?

—मैं नहीं समझता, कि ये सामान्य मानव आपको कैसे चीन्ह सकेंगे?

—मैं नहीं समझता, कि ये कब तक पोखर के पानी से ही अपनी प्यास बुझाते रहेंगे?

—मैं नहीं समझता, कि ये कब तक सीपियों और घोंघों को हीरे और मोती समझ कर प्रसन्न होते रहेंगे?

—यह कब सम्भव हो सकेगा, कि आप जैसे मानसरोवर में अवगाहन कर सकें?

—यह कब समझेंगे, कि यदि यह व्यक्तित्व पृथ्वी लोक से किसी अन्य लोक में गमन करने के लिए चला गया, तो इस देश के पास, इस पृथ्वी के पास और क्या बच जायेगा – केवल झूठ, छल, कपट, असत्य, व्यभिचार, हत्या और अंधकार।

इसलिए हे गुरुदेव! इस समय तो केवल आप ही सिद्धाश्रम में

आवागमन हेतु सिद्धहस्त हैं, यह मैंने नहीं, हजारों ऋषियों, मुनियों, योगियों और संन्यासियों ने कहा है, क्योंकि उन्होंने अनुभव किया है, उन्होंने देखा है; यही नहीं, अपितु सिद्धाश्रम के योगियों ने भी इस बात को पूर्ण क्षमता के साथ कहा है, कि इस पृथ्वी पर एकमात्र व्यक्तित्व आप ही हैं, जो कि ऐसा करने में सक्षम हैं।

यह हमारी पीढ़ी का सौभाग्य है, यह इस शताब्दी का सौभाग्य है, कि आप जैसा एक अद्वितीय युगपुरुष हमारे बीच में है और यह हमारा दुर्भाग्य है, यह इस पीढ़ी का दुर्भाग्य है, कि आपको पहिचान नहीं पा रहे हैं, आपको समझ नहीं पा रहे हैं, आपको अनुभव नहीं कर पा रहे हैं।

हे गुरुदेव! कोई ऐसी क्षमता, कोई ऐसा कृपा कटाक्ष मुझ पर करें, कि एक क्षण के लिए ही सही, उस पुण्य भूमि में आपके साथ जा सकूं और अपने नथुनों में उस वायु को भर सकूं, प्राणों में सञ्चरित कर सकूं और आपके साथ वापिस लौट सकूं।
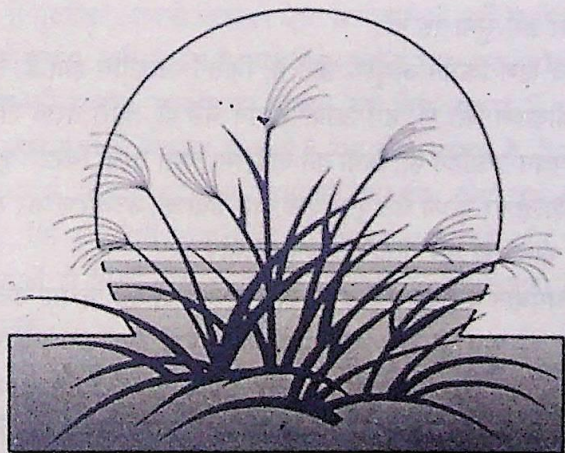
ऋषि-मुनि

सहस्त्र वर्ष योगिनां कृष्ण इन्द्रस्तथैव च।
अष्टगन्धं च तेजस्वं दुर्लभो दुर्लभो नरः।।

सिद्धाश्रम वह स्थान है, जहां हजारों-हजारों वर्ष की आयु प्राप्त योगी विचरण करते रहते हैं। ऐसे योगी भी हैं, जो सैकड़ों वर्षों से समाधिस्थ हैं और जिन पर मिट्टी की परत छा गई है। ऐसे योगी भी हैं, जो हजारों वर्षों की आयु प्राप्त करने के बाद भी यौवनवान दिखाई देते हैं और ऐसे योगी भी हैं, जिनका मुखमण्डल सूर्य के समान तेजस्वी और चन्द्रमा के समान शीतल है।

सिद्धाश्रम के योगियों ने स्वयं स्वीकार किया है, कि उच्चकोटि के व्यक्तित्व आज भी वहां सशरीर उपस्थित हैं। कृष्ण, राम, महावीर, हनुमान, कृपाचार्य, भीष्म, किंकर स्वामी, विशुद्धानन्द जी और ऐसे सैकड़ों योगी, यति, संन्यासी हैं, उन्हें हम उसी प्रकार से देख सकते हैं, जैसे हम यहां खड़े-खड़े दूसरे व्यक्ति को देखते हैं, उसी प्रकार से स्पर्श कर सकते हैं, जैसे कोई व्यक्ति हमारे पास खड़ा हो और हम उसे स्पर्श कर रहे हों, उसी प्रकार कृष्ण की वाणी और कृष्ण की गीता पुनः सुन सकते हैं, जैसे वे हमारे सामने बैठे हों और हमें सुना रहे हों।

वे क्षण कितने अमूल्य होते हैं, कितने अद्वितीय होते हैं, कि सामने भगवान श्रीकृष्ण बैठे हों, हम उनके सामने बैठे हों, चारों तरफ शीतल, मंद सुगन्धित पवन प्रवाहित हो, ऊषा की लालिमा चारों तरफ बिखरी हुई हो और स्फटिक शिला पर कृष्ण बैठे पुनः एक बार गीता का उच्चारण कर रहे हों और हम अपने कानों से उस गीता को सुन रहे हों।

भगवान वेद व्यास बैठे हुए हों और वे वेदों की ऋचाएं उच्चरित कर रहे हों और हम सुन रहे हों। श्रेष्ठ योगी बैठे हुए हों, जिनका मुख तपस्या की तेजस्विता से आपूरित है, उनके नेत्रों की करुणा वृष्टि से हम आप्लावित हो रहे हों और उनका प्रत्येक शब्द अमृत बन कर कानों के द्वारा हमारे हृदय में उतर रहा हो।

ऐसे दुर्लभ व्यक्तित्व आज भी सशरीर वहां विद्यमान हैं। ये व्यक्तित्व जिनके शरीर से निरन्तर अष्टगंध प्रवाहित होती रहती है और जिससे पूरा वायुमण्डल अपने आपमें दिव्य, सुगन्धित और प्राणस्विता लिये हुए होता है। जहां चारों तरफ उन योगियों की तेजस्विता की किरणें बिखर रही होती हैं और हम उन किरणों से अपने आपको आप्लावित कर रहे हैं, उन संन्यासियों की साधनाओं को अपनी आंखों से देख रहे हैं, उन पुष्पों को निहार रहे हैं, जो कभी मुरझाते नहीं . . .

उन अप्सराओं के नृत्य देख रहे हों, जिनका उल्लेख पुराणों में ही पढ़ा है, चाहे रम्भा हो, मेनका हो, उर्वशी हो, तिलोत्तमा हो, नाभिदर्शना हो और उनकी कमनीय काया, उनका हौले से चलना और उनका इठला कर देखना अपने आपमें ही एक अद्वितीय वातावरण की सृष्टि कर डालता है।

जहां चारों तरफ एक अपूर्व आभा हो, ज़हां कल-कल करती हुई सिद्धयोगा झील हो, जहां साक्षात् रुद्र, ब्रह्मा, विष्णु विराजमान हों, जहां इन्द्र विचरण करते हुए दिखाई दे रहे हों, जहां मरुद् गण गतिशील हों, जहा देवता विचरण कर रहे हों, इन सबको देखना कब सम्भव होगा? कैसे सम्भव होगा?

हे गुरुदेव! आपके बिना तो ऐसा सम्भव है ही नहीं, क्योंकि ये मनुष्य के लिए तो दुर्लभ, अति दुर्लभ है। वह किस प्रकार मल-मूत्र भरी देह से इतनी उच्चकोटि की साधना सम्पन्न कर सके? वह किस प्रकार से इस अन्नमय कोश से प्राण तत्त्व में विलीन हो सके? यह कैसे सम्भव है, कि वह इतनी दिव्य साधनाएं सम्पन्न कर अपने आपको वायवीय बना सके? यह कैसे सम्भव है, कि वह ऐसी पुण्य भूमि में विचरण कर सके और इन सबको अपनी आंखों से निहार सके? यह कब सम्भव है, कि उसको दिव्य दृष्टि प्राप्त हो सके?

यह तो केवल आपकी कृपा के माध्यम से ही सम्भव है। जिस पर आपकी कृपा दृष्टि हो जाती है, जिस पर आपके करुण नेत्र ठिठक जाते हैं, जो आपके हृदय में स्थापित हो जाता है, उस पर आपकी कृपा से ही, आपकी तेजस्विता से ही यह सम्भव हो सकता है, कि वह मनुष्य आपके साथ

सिद्धाश्रम जा सके और इस देव दुर्लभ भूमि के दर्शन कर सके, वहां के रज को अपने भाल पर चन्दन की तरह लगा सके, वहां विचरण कर सके, सिद्धयोगा झील में स्नान कर सके, जन्म-मरण से छुटकारा पा सके, रोग रहित हो सके, तेजस्वी मुखमण्डल प्राप्त कर सके और अप्सराओं के नृत्य को देख कर अपने आपको गौरवान्वित अनुभव कर सके।

हे गुरुदेव! समय तो बहुत कम है और हम निरन्तर मृत्यु की ओर गतिशील हैं। एक दिन यमराज हमें अपनी दाढ़ों के बीच में दबा देगा और हम समाप्त हो जायेंगे, तब हमारे पास कुछ नहीं बचेगा और हम इस सौभाग्य से वञ्चित हो जायेंगे।

आप जैसे गुरुदेव के रहते हुए भी यदि हम इस सौभाग्य से वञ्चित हो जाते हैं, तो यह हमारे दुर्भाग्य के अलावा और क्या हो सकता है? आपकी कृपा प्राप्त ही न कर सकें, तो फिर जीवन का अर्थ ही क्या हो सकता है? आपकी करुणा की वर्षा से आप्लावित न हो सकें, तो हमारी साधना और दीक्षां व्यर्थ है?

इस जीवन में सिद्धाश्रम आ-जा न सकें, तो फिर यह जीवन किसी भी योनि में मल-मूत्र में जन्म लेगा और अगले जन्म में आप प्राप्त होंगे या नहीं, कुछ भी नहीं कहा जा सकता और यह सोच-सोच कर ही चित्त व्याकुल हो रहा है, हृदय दग्ध हो रहा है, आंखों से अश्रुधार प्रवाहित हो रही है।

गन्धर्व

सर्व संगीत गायन्ती देव संगीत उच्यते।
न श्रूयात् न कथं जिह्वा मृतोपि जीवितो नरः।।

जो देवताओं का संगीत गाते हैं, जो इन्द्र लोक में संगीत का उच्चारण करते हैं, उन्हें गन्धर्व कहते हैं। वह संगीत तो अपने आपमें अद्वितीय, अप्रमेय और ऐसा होता है, जो कण-कण को आप्लावित कर दे, रस से भर दे, वातावरण को बदल दे, सुगन्ध बिखेर दे और जैसा चाहें, वैसे वातावरण की सृष्टि कर दें।

जिसने एक बार गन्धर्व संगीत सुन लिया, ऐसा लगा, कि उसे और कुछ सुनने को बाकी रहा ही नहीं। मगर यह प्रत्येक के भाग्य की बात नहीं है। देव संगीत सुनना अपने आपमें एक सौभाग्य होता है, क्योंकि वे ब्रह्माण्ड से निकली हुई ध्वनि तरंगें होती हैं। इस मनुष्य लोक में जो संगीत होता है, वह इनसे करोड़ों-करोड़ों गुने ऊंचे स्तर का संगीत होता है, जिसके माध्यम से मृत आदमी को भी जीवित किया जा सकता है, जिसके माध्यम से अग्नि को प्रज्वलित किया जा सकता है, दीप जलाये जा सकते हैं, जिसके माध्यम से सुगन्धित पवन प्रवाहित किया जा सकता है, जिसके माध्यम से बहते हुए पानी को रोका जा सकता है, जिसके माध्यम से कुछ भी किया जा सकता है, क्योंकि गन्धर्व संगीत अपने आपमें ही एक सम्पूर्ण विद्या है, एक सम्पूर्ण ज्ञान है, एक सम्पूर्ण चेतना है और वास्तव में ही उन व्यक्तियों का सौभाग्य होता है, जो ऐसे संगीत का एक अंश भी सुन सकें।

सिद्धाश्रम में स्थायी रूप से गन्धर्व रहते हैं। वहां प्रातःकालीन और सायंकालीन, दोनों ही काल में पूरे सिद्धाश्रम में संगीत की स्वर लहरियां प्रवाहित होने लगती हैं, ऐसा लगता है, जैसे एक मधुरिमा छा गई हो, ऐसा लगता है, जैसे वातावरण की नवीन सृष्टि हो गई हो, ऐसा लगता है, कि कुछ ऐसा घटित हो रहा है, जो पूरे शरीर को, मन को, आत्मा को, प्राण को बदल रहा हो, ऐसा लगता है, जैसे वृद्धावस्था पुनः यौवन में परिवर्तित हो रही हो,

ऐसा लगता है, जैसे रक्त में एक नवीन ताजगी और तरंगें प्रवहित हो रही हैं और चारों तरफ एक हल्की सी, मधुर, आनन्दित, तरंग युक्त स्वर लहरियां बहने लगती हैं, ऐसे संगीत को देव संगीत कहा जाता है।

जहां वेद की ऋचाएं हैं, जहां वेद व्यास का उच्चारण है, जहां घुंघरुओं की खनक है, जहां चपल बालिकाओं, अप्सराओं के चलने की ठुनक है, जहां सरसराहट है, जहां कल-कल करती हुई सिद्धयोग झील की सुर लहरी है, जहां वासन्ती हवा का झोंका है, जहां कण-कण में स्पन्दन है और जहां चारों तरफ एक अपूर्व सुगन्ध प्रवाहित है।

यह सब उस गंधर्व संगीत के माध्यम से ही सम्भव है, जहां वाद्य यंत्र अपने आप बज उठते हैं, उन्हें बजाने के लिए किसी मंच की आवश्यकता नहीं होती, किसी मनुष्य की आवश्यकता नहीं होती। गन्धर्व बैठे रहते हैं और उन वाद्य यंत्रों से अपने आप ध्वनियां प्रवाहित होती रहती हैं, अपने आप सुर-ताल संयोजित होता रहता है, अपने आप स्वर लहरियां निकलती रहती हैं और जैसा अवसर होता है, उसके अनुसार ही ये स्वर लहरियां उस वातावरण की सृष्टि कर डालती हैं, जिस वातावरण की कामना होती है, इच्छा होती है और आश्चर्य की बात तो यह, कि ऋषि, मुनि, योगी, यति, संन्यासी, साधक या सिद्ध आदि जिस प्रकार की भी ध्वनि सुनना चाहे, उसे वैसी ही ध्वनि सुनाई देती है। ऐसा नहीं है, कि प्रत्येक को एक ही प्रकार की ध्वनि सुनाई दे। जो थिरकना चाहता है, उसे नृत्यमय संगीत सुनाई देने लगता है, जो मचलता है, उसे वैसी ही संगीत लहरी सुनाई देती है।

इस पृथ्वी तल के निवासियों का ऐसा सौभाग्य नहीं है, कि वे ऐसा देव संगीत सुन सकें। करोड़ों-करोड़ों वाद्य यंत्रों से भी वह संगीत, वह ध्वनि उच्चरित नहीं की जा सकती, उस वातावरण की सृष्टि नहीं की जा सकती और वह क्या संगीत है, कैसा संगीत है, किस प्रकार का संगीत है, उसका भाव क्या है और किस प्रकार के वातावरण की सृष्टि होती है, उसको यह मनुष्य की जीभ नहीं कह सकती, इस जिह्वा में इतनी सामर्थ्य नहीं है, कि उन शब्दों को संयोजित करके कह सके। गुड़ का स्वाद नहीं बताया जा सकता, ठीक उसी प्रकार से उस संगीत को शब्दों में नहीं बांधा जा सकता, उस संगीत का

वर्णन नहीं किया जा सकता, वह तो केवल सुनने वाला ही अनुभव कर सकता है, एहसास कर सकता है, कि वास्तव में यह संगीत क्या है, कैसा है, अद्वितीय है, अप्रतिमेय है, जिसको सुन कर अप्सराओं के पांव थिरकने लग जाते हैं, देवताओं के सिर झूमने लग जाते हैं, ऋषि-मुनियों के शरीर में पुलकन और रोमाञ्च प्रारम्भ हो जाता है, पुष्प मुस्कुराने लग जाते हैं, पत्तियां खिलखिलाने लग जाती हैं, लहरें अठखेलियां करने लग जाती हैं और चारों तरफ एक मधुरिमा छा जाती है।

वास्तव में ही मृत तुल्य व्यक्ति भी ऐसे संगीत का एक अंश भी सुन ले, तो वह जीवित हो उठता है, मगर ऐसा संगीत तो सिद्धाश्रम में ही सम्भव है, जहां मृत्यु नहीं है, रोग नहीं हैं, दु:ख नहीं है, दारिद्र्य नहीं है, कष्ट नहीं है, पीड़ा नहीं है, अभाव नहीं है, चिन्ता नहीं है।

हे गुरुदेव! आप हमें ऐसे स्थान पर ले चलिये, आप कुछ ऐसी कृपा करिये, कि हम ऐसे देव गन्धर्व संगीत को सुन सकें, हम अनुभव कर सकें, कि संगीत क्या है, हम जीवन को रोमाञ्चित और धन्य कर सकें, हम उस आनन्द की उपलब्धि प्राप्त कर सकें, यह सब आपके द्वारा ही सम्भव है, आपके माध्यम से ही सम्भव है, आपकी कृपा कटाक्ष के द्वारा ही यह सब कुछ हो सकता है। जीवन तो पल-पल परिवर्तित हो रहा है, पल- पल वृद्धावस्था की ओर अग्रसर हो रहा है, पल-पल दु:खों के बोझ से कमर झुकती जा रही है, जीभ लड़खड़ाने लग गई है, आंखों की रोशनी धुंधली हो गई है, बाल सफेद होने लग गए हैं, शरीर पर झुर्रियां होने लग गई हैं, फिर कौन सा क्षण आयेगा, जब हम वहां जा सकेंगे? फिर किस प्रकार से आपकी कृपा प्राप्त हो पायेगी? किस प्रकार से हम आपके साथ चल सकेंगे? कब चल सकेंगे?

गुरुदेव! कुछ ऐसी कृपा करें, कि हम, आपके शिष्य वहां चल सकें। मैं, आपका एक अकिञ्चन दास, आपकी ओर टकटकी लगाये हुए बैठा हूं, मेरा सारा जीवन आपको समर्पित है। आप ऐसी कृपा करें, कि मैं आपके साथ चल कर और सिद्धाश्रम में प्रवेश पा कर इस प्रकार के देव संगीत को सुन सकूं अनुभव कर सकूं।

अप्सराएं

अति रूपं च सौन्दर्यं षोडशी गन्ध माप्नुयात्।
चिर यौवन सम्पूर्णं अप्सरा विचरन्ति वै।।

सभी एक सौ आठ अप्सराएं निरन्तर वहां विचरण करती रहती हैं, आज्ञा मिलने पर ही वे अन्य किसी लोक में जा पाती हैं, चाहे वह इन्द्र लोक हो या अन्य लोक हो, उनका स्थायी निवास तो सिद्धाश्रम ही है।

जो अत्यधिक सुन्दर हैं, जो अत्यधिक सौन्दर्य युक्त हैं, जिनको देखने से ही उनका रूप मैला होने लगता है, सघन केशराशि, सुन्दर ललाट, सुती हुई नाक, बहुत नाजुक गुलाब की पंखुड़ियों के समान होंठ, चिबुक के पास गड्ढा सा, जिसमें कोई भी व्यक्ति कूदने के लिए आतुर हो, शंख की तरह त्रिवली युक्त कंठ, बड़े-बड़े नेत्र, भयभीत से, सकुचाये हुए, मुस्कुराते हुए, सम्मोहक से, जो किसी को भी अपनी ओर खींचने के लिए समर्थ हों, झुकी हुई पलकें, अण्डाकार चेहरा, रंग ऐसा, कि जैसे दूध में केसर घोल दी हो, लम्बे और सुन्दर हाथ, पतली उंगलियां जैसे कि विधाता ने कामदेव को आमंत्रित करने के लिए ही उनकी सृष्टि की हो, यौवन से परिपूर्ण उभरा हुआ वक्षस्थल, दो कुचयुग्म जैसे कि दो कबूतर हों और जिन्हें बांध कर रख दिया हो और वे उड़ने के लिए फड़फड़ा रहे हों, दो हस्ति पुत्र जो झूम रहे हों और जिन पर जाली पड़ी हुई हो, दो ब्राह्मण पुत्र जो सूर्य को अर्घ्य देने के लिए खड़े हुए हों, ऐसे कुचयुग्म युक्त वक्षस्थल किसका मन आकृष्ट नहीं करेंगे?

हृदय का वह गह्वर, जिसमें कामदेव स्वयं छुपा हुआ बैठा है, पीपल के पत्ते की तरह पेट और जिस पर हल्की सी रोम राशि, ऐसी कि जैसे इन सीढ़ियों पर पांव रखता हुआ कामदेव ऊपर चढ़ रहा हो, हस्तीसुण्ड की तरह जंघाएं, नाजुक पांव, कोमल और सुन्दर चरण, जो पृथ्वी पर रखने योग्य नहीं हों, जहां-जहां पर पांव पड़ते हों, वहां-वहां पर गुलाल छिड़की हुई अनुभव होती हो, सारा शरीर एक सांचे में ढला हुआ, जिन्हें देखने के लिए बार-बार मन आकृष्ट होता है, जो चलती हैं, तो ऐसा लगता है, कि जैसे सुगन्धित पवन चल रही हो, ऐसा लगता है, कि जैसे हिरणी कुलांचे मार रही हो, ऐसा लगता है, कि जैसे यौवन स्वयं साकार गतिशील हो रहा हो, ऐसा लगता है, कि सारा

रूप, यौवन और सौन्दर्य एक जगह सिमट कर पूरे संसार को बेधने के लिए आतुर हो, ऐसा लगता है, कि जैसे ये अप्सराएं, ये रूप गर्विताएं, ये सौन्दर्यशालिनियां, ये यौवन के भार से दबी हुई सुन्दरियां, ये फूल से भी नाजुक अप्सराएं किसी को भी समाप्त करने के लिए, आबद्ध करने के लिए तैयार बैठी हुई हों, ऐसी अप्सराएं पग-पग पर सिद्धाश्रम में दिखाई देती हैं, जो प्रतिक्षण चलती ही रहती हैं, नृत्य करती ही रहती हैं, गतिशील होती ही रहती हैं और सिद्धाश्रम के उस किनारे पर बैठी हुई ऐसी लगती हैं, कि जैसे पूरा यौवन सिमट कर किसी चट्टान पर बैठ गया हो।

ऐसी षोडशियां, जिनकी उम्र बढ़ती नहीं, जिन पर समय के थपेड़ों की छाप पड़ती नहीं, जिनके चेहरे पर झुर्रियां पड़ती नहीं, जिनके चेहरे पर कोई विषाद नहीं होता, जिनकी आंखों की कोर अपने आपमें विशाल और गहरी होती हैं, जिनकी भौहें ऐसी, कि जैसे कामदेव ने प्रत्यंचा चढ़ा दी हो और जिनके शरीर से निरन्तर सुगन्ध प्रवाहित हो रही हो, ऐसी अप्सराएं अनायास ही सामने आ जाती हैं और उनके दोनों होंठ हौले से खुलते हैं, तो शब्द ऐसे निकलते हैं, जैसे घुंघरुओं की खनक हो और जो बड़े से बड़े योगी, यति और संन्यासी का भी मन डंवाडोल करने के लिए पर्याप्त होता है।

जो चिर यौवनवती होती हैं, जिनके नाम से ही यौवन सार्थक होता है, जो रूप के भार से दबी हुई, यौवन के भार से उभरी हुई, सौन्दर्य के भार से गतिशील होती हुई अपने आपमें सम्पूर्णता लिये हुए होती हैं। जहां पर ऐसी अप्सराएं विचरण करती हैं, क्या वह मृत्यु लोक में सम्भव है?

उसका हजारवां हिस्सा भी सम्भव नहीं है। श्रेष्ठ से श्रेष्ठ सुन्दरियां भी उन अप्सराओं के पैरों के नाखून के बराबर भी नहीं होतीं। उनको देख कर ही अनुभव होता है, कि यौवन क्या है? सौन्दर्य क्या है? मोहकता क्या है? माधुर्य त्या है?

यह देखना भी एक सौभाग्य है, जो मनुष्य के वश की बात नहीं होती। जब वे नृत्य के लिए थिरकती हैं, तो सारा वातावरण थिरकने लग जाता है, देवता सांस रोक कर देखने लग जाते हैं, ऋषि-मुनियों की समाधि टूट जाती है और सारा वातावरण, सारा वायुमण्डल अपने आप शांत, अपलक, चुपचाप, निस्पन्द हो जाता है। ऐसी अप्सराओं के बीच जब मनुष्य पहुंचता है,

तो एक अजीब सी खुमारी में डूब जाता है और उसके बाद भी जो अपने आपमें नियंत्रित होता है, वह सही अर्थों में योगी है।

हे योगीराज! हे गुरुदेव! हे प्राण धन! हे जीवन सर्वस्व! हे प्राणों के स्पन्दन! आप मेरे गुरु हैं, आप सिद्धाश्रम में आ जा सकते हैं और जीवन का एकमात्र लक्ष्य, एकमात्र सौन्दर्य, एकमात्र इच्छा यही होती है, कि सिद्धाश्रम जा सकें। मगर इन साधनाओं के माध्यम से तो लाखों वर्ष लग जाते हैं, हजारों वर्ष लग जाते हैं और इतना समय इस मल-मूत्र भरी देह के पास नहीं है। यह तो पल-पल अग्रसर होती हुई, श्मशान की ओर यात्रा करती रहती है।

फिर ऐसा कौन सा क्षण आयेगा, जब हम आपके साथ चल सकेंगे? फिर वह क्षण कौन सा होगा, जब आपकी उंगली पकड़ कर हम आगे बढ़ सकेंगे? फिर ऐसा कौन सा वक्त होगा, जब आपकी कृपा हम पर गंगा की तरह प्रवाहित होगी, जब आप अपने मुंह से हमें शिष्य उच्चरित करेंगे, जब आपकी कृपा हमें प्राप्त होगी, जब हम आपके साथ सिद्धाश्रम जा सकेंगे, जब हम जीवन का यह सौन्दर्य देख सकेंगे, जब हम अपने सौभाग्य पर गर्व कर सकेंगे, जब उस खुमारी में डूब सकेंगे, अप्सराओं के पद-ताल इन कानों से सुन सकेंगे, जब रोग रहित और मृत्यु रहित हो कर विचरण कर सकेंगे और वापिस आ कर एक अजीब सी मस्ती में मदहोश हो सकेंगे?

गुरुदेव! अब बहुत विलम्ब हो चुका, अब विलम्ब सह्य नहीं है, अब एक भी क्षण काटना बहुत कठिन हो गया है। अब केवल एक ही इच्छा रह गई है, कि आप और विलम्ब न करें। हम किसी भी प्रकार से आप पर दबाव नहीं डाल सकते, कातर स्वर में प्रार्थना ही कर सकते हैं और हमारी प्रार्थना है, कि ऐसे अद्वितीय सिद्धाश्रम में आप हमें ले जायें, अपने साथ, अपने संग, जिससे कि हम वहां का सौन्दर्य, वहां की ताजगी, वहां की मस्ती, वहां का माधुर्य, वहां का आनन्द, वहां की उमंग देख सकें, अनुभव कर सकें और सही अर्थों में आपके शिष्य कहला सकें, क्योंकि इस पृथ्वी पर आपके अलावा और कोई योगी, यति, संन्यासी, व्यक्ति नहीं है, जो सिद्धाश्रम में किसी भी शिष्य को ले जा सके और वापिस ला सके।

दुर्लभ देवता

इन्द्रो वह्नि गणः देवं कृष्णं रुद्रश्च विष्णुतः।
ब्रह्मायां साक्षात् रूपं यत्र तत्र विचीर्यते।।

जिन देवताओं की हम पूजा करते हैं, रोज मंत्र जप करते हैं, रोज प्रार्थना करते हैं, रोज दीपक जलाते हैं, रोज सुगन्धित अगरबत्ती जलाते हैं और उसके बाद भी वे देवता प्रकट नहीं होते, साक्षात् उपस्थित नहीं होते, वे दिखाई नहीं देते, फिर मन निराशा से भर जाता है और ऐसा लगने लगता है, कि साधनाएं बेकार हो गई हैं, मंत्र जप व्यर्थ हो गए हैं। शायद हममें कोई न्यूनता है, कि सही ढंग से हम मंत्र जप कर नहीं पाते, सही ढंग से साधना सम्पन्न कर नहीं पाते और मन मार कर बैठ जाते हैं।

ऐसे सभी देवता सिद्धाश्रम में विद्यमान हैं, वे चाहे शिव हों, विष्णु हों, ब्रह्मा हों, इन्द्र हों, अग्नि हों, वायु हों, वरुण हों या कोई भी देवता हों। कृष्ण, राम भी वहां ठीक उसी प्रकार से दिखाई देते हैं, जिस प्रकार मृत्यु लोक में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को देखता है, मिल पाता है, स्पर्श कर पाता है, आलिंगन बद्ध हो पाता है।

क्योंकि वह देव भूमि है, देवता स्वयं वहां आने के लिए तरसते हैं, देवता स्वयं वहां निवास करते हैं, देवता स्वयं वहां विचरण करते रहते हैं, क्योंकि उनमें वह क्षमता है, कि वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर आ सकें, जा सकें, इन्द्रलोक से आ-जा सकें, कैलाश पर्वत को छोड़ कर शिव सिद्धयोगा झील के किनारे बैठ सकें, भगवान विष्णु वहां आ कर बैठ सकें।

कृष्ण का सुदर्शन चक्र निरन्तर सिद्धाश्रम के चारों ओर गतिशील बना रहता है, ब्रह्मा के चारों मुंह से निरन्तर वेद ध्वनि उच्चरित होती रहती है, इन्द्र का सौन्दर्य चारों तरफ विचरता है, कामदेव और रति यत्र-तत्र विचरण करते हुए दिखाई देते रहते हैं। ऐसा कोई भी देव नहीं है, जो वहां दिखाई न दे, क्योंकि सिद्धाश्रम का विस्तार अनन्त है और जब हम घूमते हैं, तो कोई न कोई दिखाई दे ही जाता है, उनका यौवन, उनका सौन्दर्य, उनकी साक्षात् प्रतिमा,

उनकी तेजस्विता देख कर मन ठिठक कर रुक जाता है, भाव विभोर हो जाता है, उनके चरणों में झुक जाने के लिए आतुर हो जाता है।

यह सब सिद्धाश्रम के माध्यम से ही सम्भव है, यह सब सिद्धाश्रम में ही देखा जा सकता है। जब वहां प्रात:कालीन प्रार्थना होती है या सायंकालीन आरती होती है, तो सभी देवता, मरुद् गण, यम, कुबेर, विष्णु, ब्रह्मा, रुद्र, इन्द्र पंक्तिबद्ध खड़े रहते हैं, अप्सराओं के नृत्य होते रहते हैं, मधुर ध्वनि से गन्धर्व आरती उच्चरित करते हैं और सामने साक्षात् परब्रह्म प्रात:स्मरणीय विश्व वन्द्य गुरुदेव सच्चिदानन्द आसन पर विराजमान होते हैं। कितना अपूर्व दृश्य होता है, अद्वितीय आलोक होता है, जिसकी कोई तुलना ही नहीं है।

हम कब तक साधनाएं करें? कब तक मंत्र जप करते रहें? आप कब तक भूल-भुलैया में हमें डालते रहेंगे? कब तक हमारे ऊपर आप माया जाल डालते रहेंगे? कब तक हम उस माया से ग्रसित होते रहेंगे? हमारे ज्ञान चक्षु और आत्म चक्षु कब जाग्रत होंगे? कब हम एहसास करेंगे, कि हमारे बीच में एक अद्वितीय व्यक्तित्व उपस्थित है, जो अत्यन्त साधारण वेश-भूषा में है, अत्यन्त सामान्य सा प्रतीत होता है, मगर जिसके अन्दर सम्पूर्ण हिमालय दृढ़ता के साथ उपस्थित है? हम आपके अन्दर उतर कर कब आपको पहिचान पायेंगे? हमारा यह दुर्भाग्य कब मिटेगा? हम कब आपके चरणों से लिपट पायेंगे? हम किस प्रकार से आपको पा सकेंगे? हम किस प्रकार से आपके साथ सिद्धाश्रम जा सकेंगे?

मैं एक व्यामोह में फंस गया हूं। आप मुझे इसमें से निकालिये, अपने चरणों में स्थान दीजिए, अपने हृदय से लगा लीजिए, अपने अन्दर उतार लीजिए और अपने साथ मुझे सिद्धाश्रम ले चलिए, जिससे कि मैं आपके साथ सिद्धाश्रम जा कर उन देवताओं के दर्शन कर सकूं। इस समय आपके अलावा इस पृथ्वी पर शायद ही कोई व्यक्तित्व हो, कोई योगी हो, कोई संन्यासी हो, जो मल-मूत्र से भरे देह युक्त व्यक्ति को ले जा सके।

कल्पवृक्ष

समुद्र मंथनं पश्चात् कल्पवृक्षत्व दुर्लभं।
सिद्धाश्रम त्व स्थापित्वं कामधेनुस्तथैव च।।

जब समुद्र मंथन हुआ, तब एक तरफ देवताओं और दूसरी तरफ दानवों ने वासुकि की रज्जु बना कर समुद्र-मंथन किया। उसमें से चौदह रत्न निकले, उन चौदह रत्नों में विष भी था, अमृत कलश भी था, कामधेनु भी थी, कल्पवृक्ष भी था, रम्भा भी थी और पांचजन्य शंख भी था। बाकी को तो फिर भी हमने देखा, आज तक कामधेनु और कल्पवृक्ष नहीं देखा। अभी तक तो सुना ही सुना है, कि कल्पवृक्ष के नीचे बैठ कर जो कुछ भी सोचा जाता है, वह प्राप्त हो जाता है।

गुरुदेव! हम आपके साथ सिद्धाश्रम जांना चाहते हैं और वहां ब्रह्माण्ड में दुर्लभ कल्पवृक्ष के नीचे बैठ कर विश्राम करना चाहते हैं, अनुभव करना चाहते हैं, कि मानव जो भी इच्छा करे – धन, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य, भोग, वस्त्र, यौवन, पूर्णता, अजरता, अमरता और अन्य सब कुछ, तुरन्त प्राप्त हो जाता है।

कहा जाता है, कि जिसने एक बार कल्पवृक्ष के दर्शन कर लिये, उसने सब कुछ प्राप्त कर लिया, कहा जाता है, कि जिसने एक बार कल्पवृक्ष को स्पर्श कर लिया, वह जरा-मरण से मुक्त हो गया, कहा जाता है, कि एक बार जिसने कल्पवृक्ष को छू लिया, वह वृद्धावस्था से पूर्ण यौवनवान बन जाता है और पुराण व शास्त्र गलत नहीं हो सकते। जो कहा गया है, वह सत्य है, प्रामाणिक है और ऐसा कल्पवृक्ष केवल सिद्धाश्रम में ही है।

गुरुदेव! हम आपके साथ चल कर उस कल्पवृक्ष की शीतल छाया में बैठना चाहते हैं, उस कल्पवृक्ष को अनुभव करना चाहते हैं, यदि कुछ इच्छाएं रह भी गई हों, तो पूर्ति कर लेना चाहते हैं, एक बार अनुभव कर लेना चाहते हैं। क्या ऐसा सम्भव हो सकेगा? कैसे सम्भव हो सकेगा – मुझे कुछ समझ में नहीं आता। जिस प्रकार महाभारत युद्ध में अर्जुन व्यामूढ़ हो गया था, ठीक उसी प्रकार से मैं व्यामूढ़ हो गया हूं, मुझे कुछ समझ में नहीं आता, कि

मैं क्या करूं, कैसे करूं? मुझे तो केवल इतना ही ज्ञात है, कि आप मेरे साथ हैं, इतना ही ज्ञान है, कि आपकी कृपा मुझ पर हो सकी है, इतना ही ज्ञात है, कि आपकी कृपा से मैं सिद्धाश्रम जा सकता हूं, इतना ही ज्ञात है, कि आपकी उंगली पकड़ कर कल्पवृक्ष की छाया तले बैठ सकता हूं और कामधेनु का दुग्धपान कर जीवन को देवतुल्य बना सकता हूं।

वास्तव में ही जो अद्वितीय है, अप्रमेय है, अतुलनीय है, वह सब कुछ तो सिद्धाश्रम में है और सिद्धाश्रम के तो आप प्राण हैं, उसके स्थापक हैं, जब आप जाते हैं, तो योगी, यति, संन्यासी अपनी समाधि तोड़ कर आपके दर्शन के लिए लालायित हो जाते हैं, जब आप चलते हैं, तो गंधर्व संगीत उच्चरित करने लग जाते हैं, आपका विशाल वक्षस्थल देख कर अप्सराएं टकटकी लगा कर आपको देखती रह जाती हैं। जिस रास्ते से आप निकलते हैं, वह रास्ता, वहां की माटी चंदन की तरह पवित्र और दिव्य बन जाती है और वे ऋषि-मुनि उस धूलि को ले कर अपने ललाट पर, अपने सिर पर लगाते हैं, अप्सराएं उस माटी से अपनी मांग भरती हैं, गन्धर्व उस माटी को स्पर्श कर धन्य-धन्य हो उठते हैं। आप सामान्य मनुष्यों की तरह दिखाई देते हुए भी विशिष्ट हैं, अद्वितीय हैं। यह युग, यह समाज आपको नहीं पहिचान पा रहा है, नहीं पहिचान पायेगा। राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, ईसा, सुकरात — किसको पहिचान पाया है यह युग, क्योंकि पहिचानने की शक्ति ही हमने खो दी और इसीलिए मानव जाति दुःखी है, पीड़ा युक्त है, चिन्ता युक्त है, जरा-मरण से युक्त है।

मगर मैं इस प्रकार की मृत्यु नहीं पाना चाहता, मैं इस प्रकार से वृद्धावस्था का लबादा ओढ़ कर गतिशील नहीं होना चाहता, मैं इस प्रकार से मल-मूत्र भरी जिन्दगी जीते हुए दुःखी नहीं रहना चाहता। मैं तो चाहता हूं, कि आप हों और आपके सामनें मैं हूं, मैं तो चाहता हूं, कि आपकी कृपा मुझ पर हो, मैं तो चाहता हूं, कि मेरे पास अन्तर्दृष्टि हो, दिव्य चक्षु हों, जिसके माध्यम से मैं आपके विराट स्वरूप के दर्शन कर सकूं, आपको सही रूप से पहिचान सकूं, मैं आपको पूर्णता के साथ अपने हृदय में उतार सकूं और आपकी कृपा प्राप्त कर सकूं।

यह तभी सम्भव है, जब आपकी कृपा मुझ पर हो, क्योंकि और कोई अवलम्ब ही नहीं है, और कोई सहारा नहीं है, सिर्फ मेरे चाहने से कुछ नहीं हो सकता, अन्य कोई उपाय, कोई तरीका, कोई विधान नहीं है, जिसके माध्यम से हम आपको पहिचान सकें, अनुभव कर सकें, देख सकें, प्राप्त कर सकें और सिद्धाश्रम जा सकें। केवल एक ही युक्ति है, कि आप प्रसन्न हो जायें, केवल एक ही युक्ति है, कि आपकी कृपा मुझ पर हो जाय, केवल एक ही युक्ति है, कि आपके द्वारा माया रूपी पर्दा हम पर पड़े नहीं, हम उसके आवरण को छिन्न-भिन्न करके ब्रह्ममय बन सकें और आपके विराट स्वरूप के दर्शन कर सकें।

आपकी यह कृपा दृष्टि मुझ पर कब होगी, मैं कुछ भी नहीं जानता। मैं तो बराबर प्रयत्नशील हूं, मगर त्रुटियों से भरा हुआ व्यक्ति हूं, पग-पग पर गलतियां करता रहता हूं। मुझे ज्ञात नहीं है, कि क्या सही है, क्या गलत है, क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिए? मैं तो बस इतना ही जानता हूं, कि आप अद्वितीय हैं, आप परब्रह्म हैं, आप ब्रह्म स्वरूप हैं, आप शुद्ध-बुद्ध-चैतन्य हैं, आप निर्मल हैं, आप परिपूर्ण हैं, आपके कदमों में हजारों-हजारों नदियां, हजारों-हजारों तीर्थ समाहित हैं और मैं उसमें अवगाहन करता हुआ आपकी सामीप्यता प्राप्त करना चाहता हूं, आपके साथ सिद्धाश्रम जाना चाहता हूं और वहां जा कर वापिस आना चाहता हूं, जिससे कि दूसरों का भी कल्याण कर सकूं, उन्हें बता सकूं।

प्रभु! अब आप ज्यादा माया का आवरण हम पर मत डालिये। हम शिष्य, शिष्याएं, साधक क्षुद्र हैं, मल-मूत्र से भरे हुए दुर्गन्ध युक्त हैं, न्यून हैं, हममें घमण्ड है, छल है, झूठ है, कपट है, असत्य है, व्यभिचार है, न्यूनताएं हैं, आप इन सबको परे हटा कर हमें सही अर्थों में शिष्य बनाइये, जिससे कि हम आपके चरणों में न्यौछावर हो सकें, पूर्णता के साथ निमग्न हो सकें और आपके साथ सिद्धाश्रम चल सकें।

गुरुदेव महत्ता

पृथिव्या एकमात्रेण त्वं गमनं आ जा न पि।
सर्व सिद्धिश्च युक्तेण अणिमा महिमा दपि।।

गुरुदेव! जहां तक मेरी जानकारी है, इस पृथ्वी पर सिद्धाश्रम गमन अत्यधिक कठिन है, कठिन ही नहीं असम्भव है, देवताओं के लिए भी दुर्लभ है, तो हम मनुष्यों के लिए कहां से सम्भव हो सकता है। जिसका चित्र लिया नहीं जा सकता, जहां सामान्यत: गमन किया नहीं जा सकता, जिसको इन आंखों से देखा नहीं जा सकता। मगर हिमालय के समस्त सिद्ध, साधक, योगी एक ही बात कहते हैं, कि पृथ्वी लोक पर केवल मात्र आप ही ऐसे साधक हैं, सिद्ध हैं, योगी हैं, जो सिद्धाश्रम में जा भी सकते हैं और आ भी सकते हैं।

जहां तक मेरी जानकारी है गुरुदेव! इसमें वही पूर्णता प्राप्त कर सकता है, जिसको अणिमा, लघिमा, गरिमा आदि सोलह सिद्धियां प्राप्त हों और आप इन सोलह सिद्धियों में पूर्णत: दक्ष हैं। तभी तो यह सम्भव है, कि आप सिद्धाश्रम में जा सकते हैं और आ सकते हैं।

मैंने यह भी सुना है, कि वहां जाने के लिए शरीर को अंगूठे के आकार का बना दिया जाता है और सिद्धाश्रम में जा कर जैसा चाहें, वैसा ही आकार शरीर को दिया जा सकता है। वहां जा कर आप वैसे ही अद्भुत तेजस्वी व्यक्तित्व बन जाते हैं। किंकर स्वामी के कथनानुसार आपका प्रदीप्त उन्नत भाल, हिमालय के समान वक्षस्थल, अजानुपर्यन्त बाहें, पुष्ट जंघाएं, गहरी आंखें, भेदती हुई दृष्टि और लम्बी जटाएं – सब कुछ वहां जा कर वैसा परिवर्तित हो जाता है, कि ऊंचे से ऊंचा योगी, संन्यासी भी हाथ जोड़ कर खड़ा हो जाता है।

आपका ऐसा स्वरूप यहां हम गृहस्थ शिष्यों ने देखा ही नहीं है, देखना सम्भव ही नहीं है, क्योंकि सूर्य की ओर टकटकी लगा कर देखना इन चर्म चक्षुओं के माध्यम से सम्भव नहीं है। ठीक उसी प्रकार आपका विराट रूप, जो सिद्धाश्रम में आप प्राप्त करते हैं, वह देखना हम लोगों के भाग्य में कहां?

आप हमें भी वैसे विराट व्यक्तित्व, वैसे तेजस्वी मुखमण्डल, वैसे समश्रु युक्त दैदीप्यमान भाल, ललाट की झांकी दिखा दीजिए। हमने सुना है, कि आपका कद वहां जा कर और भी ऊंचा उठ जाता है, आपका चौड़ा वक्षस्थल और भी चौड़ा हो जाता है, आपका पुष्ट शरीर अपने आपमें लाल, सुर्ख हो जाता है, आपकी आंखें अपने आपमें दहकते हुए शोलों की तरह हो जाती हैं, आपके चेहरे पर एक अद्‌भुत ओज और तेजस्विता व्याप्त हो जाती है, आपका सारा शरीर वज्र की तरह कठोर और फूल की तरह कोमल हो जाता है।

ऐसे तेजस्वी स्वरूप को देख कर कौन मोहित नहीं होगा? अप्सराएं क्यों नहीं आपको देख कर पागल हो जायेंगी? ऋषि-मुनि क्यों नहीं अपनी समाधि छोड़ कर आपके सामने नतमस्तक हो जायेंगे? गंधर्व क्यों नहीं आपको देख कर गायन करने लग जायेंगे? किन्नरियां क्यों नहीं आपको देख कर नृत्य करने लग जायेंगी?

क्योंकि आपका व्यक्तित्व है ही ऐसा। जो भी सिद्धाश्रम से आया है और जिनके द्वारा भी पढ़ा, लिखा या सुना है, वह सुन-सुन कर ही हम आश्चर्यचकित हो गए हैं।

फ़िर भी आप यहां पर अत्यन्त सामान्य और सरल प्रतीत होते हैं — यह घना माया का आवरण है। यह माया का इतना सघन आवरण है, कि उसको भेदना हमारे लिए कठिन नहीं, असम्भव है। हम ज्योंहि उस आवरण से बाहर निकलने की कोशिश करते हैं, आप फिर एक माया का पर्दा हमारे ऊपर डाल देते हैं और हम फिर आपको एक सामान्य मनुष्य मानने लग जाते हैं। यह हमारी न्यूनता है। मगर यह आपकी भी एक लीला है, कि आप एकदम से हमारे ऊपर एक ऐसा माया का आवरण डाल देते हैं, कि हम उसको भेद नहीं पाते, हमारी आंखें उस विराट व्यक्तित्व को देख नहीं पातीं।

कमर तक बिखरी हुई जटाएं . . . और हजारों-हजारों सिद्धियों का स्वामी; जिसके सामने सारे ऋषि-मुनि बौने नजर आते हैं, सिद्धाश्रम के उच्चकोटि के योगी भी आपके घुटने के बराबर भी नहीं हो पाते, जिसको देख कर पवन पागल हो उठता है, सिद्धयोगा झील की लहरें नृत्य करने लग जाती

हैं, पत्ते झूम-झूम कर यशगान करने लग जाते हैं, ऐसा विराट स्वरूप हम कब देख पायेंगे?

क्योंकि आप सर्व सिद्धियों से युक्त हैं . . . और सबसे कठिन साधनाएं अणिमा, महिमा आदि सोलह सिद्धियां हैं, जिसका ज्ञान ही किसी को नहीं है। इस पृथ्वी पर केवल आप ही ऐसे व्यक्तित्व हैं, जिसको इन सोलह सिद्धियों में पूर्ण दक्षता है। क्या हम इस योग्य नहीं बन सकते? क्या हम इन सिद्धियों को नहीं समझ सकते? क्या हम सिद्धियों को नहीं पहिचान सकते? जिस प्रकार से हनुमान जब लंका की ओर जा रहे थे और रास्ते में सुरसा मिली, तो 'ज्यों-ज्यों सुरसा बदन बढ़ावा, तासु दून कपि रूप दिखावा', सुरसा बीस फुट की हुई, तो हनुमान पचास फुट के हो गए, सुरसा सौ फुट की हुई, तो हनुमान दो सौ फुट के हो गए, सुरसा दो हजार फुट की हुई, तो हनुमान एक मच्छर की तरह एक बहुत लघु आकार ले कर उसके मुख से निकल गए। ठीक उसी प्रकार आप भी अपने शरीर को लम्बा या छोटा मनचाहा आकार दे सकते हैं और इन अणिमादि सिद्धियों के माध्यम से जिस प्रकार से कृष्ण रासलीला में सैकड़ों कृष्ण स्वरूप बन गए थे और प्रत्येक गोपी के साथ एक कृष्ण थे, ठीक उसी प्रकार आप एक ही समय में अपने सौ स्वरूप बना कर सौ स्थानों पर एक साथ दिखाई दे जाते हैं।

यह हमने अपनी आंखों से देखा है, यह हमने स्वयं अनुभव किया है, यह हमने योगियों के मुंह से सुना है और हम इतने अभागे हैं, यह पीढ़ी इतनी अभागी है, यह शताब्दी इतनी दुर्भाग्यशाली है, कि आपको समझ नहीं पाती, शायद समझेगी भी नहीं और एक बार फिर बाद में पछतायेगी और हाथ मलने के सिवा इसके पास कुछ भी नहीं रहेगा।

गुरुदेव! मैं केवल इतना ही जानता हूं, कि आप ज्यादा से ज्यादा समय पृथ्वी लोक पर दे रहे हैं। मैं यह भी जानता हूं, कि प्रत्येक लोक पर आपका विचरण है। आप कुछ ही समय में देवर्षि की तरह एक लोक से दूसरे लोक में चले जाते हैं। मैं यह भी जानता हूं, कि शुक्र ग्रह पर आपके पीछे दीवानगी की हद तक पुरुष और स्त्रियां पागल हैं। मैं यह भी जानता हूं, कि आप इन्द्र लोक में जाते हैं, तो इन्द्र स्वयं सिंहासन से उठ कर खड़े हो जाते हैं।

फिर भी आप हम गृहस्थ लोगों के बीच में रहते हैं और आलोचनाओं में झुलसते हैं, हमारे झूठ और फरेब, छल और कपट झेलते हैं, बराबर जलते हुए भी मुस्कुराते रहते हैं। यह हम लोगों का दुर्भाग्य है, यह हम लोगों का घटियापन है, यह हम लोगों का निकम्मापन है, यह हम लोगों की तुच्छता है, यह हम लोगों की क्षुद्रता है . . . और यह आपकी विराटता है, यह आपकी महानता है, यह आपकी अद्वितीयता है, यह आपकी श्रेष्ठता है, यह आपकी दिव्यता है।

गुरुदेव! आपसे मेरा निवेदन है, कि मैं अणिमादि सिद्धियों को नहीं समझ सकता, इन सारी सिद्धियों को प्राप्त करना वैसा ही है, जैसे समुद्र को एक ही सेकेण्ड में नाप लेना, परन्तु इन सबसे भी ऊपर आपकी कृपा है, आपकी करुणार्द्र दृष्टि है। आप अपनी करुणार्द्र दृष्टि मुझ पर डालें और मुझे एक बार सिद्धाश्रम ले जायें, जिससे कि मैं सही अर्थों में आपका शिष्य कहला सकूं और अपनी आंखों से सिद्धाश्रम को देख सकूं, धन्य हो सकूं, चिर यौवनमय बन सकूं, जरा-मरण से मुक्त हो सकूं, भूख, प्यास, मल-मूत्र से परे हट सकूं और अन्नमय कोश से प्राणमय कोश में परिवर्तित हो सकूं, ऐसा ही निवेदन है, ऐसी ही प्रार्थना है।

सिद्धयोगा झील

सिद्धयोगा बृहद् झील स्वच्छ निर्मल गंधयुत्।
जन्म मृत्यु जरा रोग नश्यति यः स्नान युत्।।

सिद्धाश्रम की सिद्धयोगा झील का वर्णन कई-कई ग्रंथों में आया है और सभी ने एक स्वर से कहा है, कि सिद्धयोगा झील मानसरोवर से भी करोड़ों गुणा पवित्र, दिव्य, उदात्त और श्रेष्ठ है, देवगंगा से भी ज्यादा पवित्र है, जिसका पानी इतना स्वच्छ है, कि अत्यन्त गहराई होते हुए भी इसकी तलहटी दिखाई देती है। यदि कोई सिक्का उस पानी में डाल दिया जाय और उसकी तलहटी में वह सिक्का हो, तो भी ऊपर से भी उसके अक्षर पढ़े जा सकते हैं, इससे ज्यादा स्वच्छ पानी और क्या हो सकता है। जिसकी लहरें अपने आपमें अठखेलियां करती रहती हैं, जिसमें स्नान करने से अपने आपमें ही व्यक्ति जन्म-मरण से मुक्त हो जाता है, जिसमें स्नान करने से ही व्यक्ति वृद्धावस्था से पुनः पूर्ण यौवनमय बन जाता है, जिसमें स्नान करने से ही स्त्रियां पूर्ण यौवनवान और सौन्दर्यवती बन जाती हैं, उसके सामने रति भी शरमा जाती है, क्योंकि उसका सौन्दर्य रति से भी कई गुणा ज्यादा बढ़ जाता है . . . और ऐसा व्यक्ति चौरासी लाख योनियों से मुक्त हो जाता है।

उस झील का कोई ओर-छोर नहीं है, उसके किनारों पर स्फटिक शिलाएं, मुक्तक शिलाएं, हीरक शिलाएं हैं, जिस पर आप बैठते हैं। अप्सराएं उसमें अठखेलियां करती रहती हैं, योगी, यति उसमें स्नान कर पवित्र हो जाते हैं। जब आप सिद्धयोगा झील में प्रवेश करते हैं, तो सिद्धयोगा झील अपने आपमें धन्य हो उठती है, पवित्र हो उठती है और लहरें झूम-झूम कर नृत्य करने लग जाती हैं।

जिसका पानी स्वच्छ और निर्मल है, पवित्र और उदात्त है, दिव्य और तेजस्विता युक्त है, वृद्धावस्था को यौवनावस्था में परिवर्तित करने की क्रिया है, मृत्यु को जीवन में बदल देने का रहस्य है, जिसमें एक अजीब, अपूर्व सुगन्ध प्रवाहित होती रहती है, ऐसा लगता है, कि जैसे ऐसी सुगन्ध इस संसार में और

कहीं है ही नहीं। ऐसी सिद्धयोगा झील के किनारे बैठना भी अपने आपमें सौभाग्य है, क्योंकि जब आप सिद्धयोगा झील के किनारे बैठते हैं, तो ऋषियों को, मुनियों को, योगियों को कुछ क्षण मिल जाता है आपको देखने के लिए, कुछ ऋषि-मुनि दुस्साहस कर बैठते हैं आपके चरणों को स्पर्श करने के लिए, कुछ अप्सराएं धन्य हो उठती हैं आपके वक्षस्थल को देख कर, सिद्धयोगा झील सौभाग्यशाली हो उठती है आपके चरण पखार कर और लहरें मचलने लग जाती हैं आपको स्नान कराने के लिए, वे आपके ऊपर उछलती रहती हैं और ऐसा लगता है, कि एक अपूर्व समा बंध गया है, ऐसा लगता है, कि ऐसा क्षण तो अपने आपमें अद्‌भुत है, तेजस्विता युक्त है। किनारे हिरण आ कर टकटकी लगा कर आपको देखते रहते हैं, मयूर नृत्य करने लग जाते हैं, हंस क्रीड़ा करने लग जाते हैं और चारों तरफ अपूर्व समां बंध जाता है।

उस सिद्धयोगा झील को और उसकी गंध को नथुनों में भर कर व्यक्ति मस्त हो जाता है, क्योंकि उसमें स्नान करने से अपने आपमें ही सिद्धियां प्राप्त होने लग जाती हैं, देवता लोग भी उसमें स्नान कर अपने यौवन को बनाये रखते हैं, क्योंकि उस सिद्धयोगा झील में कामदेव का निवास है, रति का निवास है, वह सौन्दर्य का आगार है, उसमें स्नान करने पर अपने आप ही सारा शरीर एक सांचे में ढल कर सौन्दर्य युक्त बन जाता है। ऐसा लगता है, कि ऐसा पुरुषोचित सौन्दर्य तो पृथ्वी पर हो ही नहीं सकता, ऐसा स्त्रियोचित सौन्दर्य तो देखा ही नहीं जा सकता। उसमें स्नान करने से कुरूप से कुरूप स्त्री भी इतनी सौन्दर्यवान बन जाती है, कि यदि उसे उंगली से स्पर्श करें, तो वह मैली सी हो जाती है, एकदम केसर घुला हुआ दूधिया रंग, सुगन्ध युक्त शरीर, सांचे में ढली हुई कमनीय काया, उज्ज्वल नेत्र, दैदीप्यमान भाल, कजरारी और झील सी आंखें और थिरकते हुए होंठ . . . क्या कुछ नहीं प्राप्त हो जाता इस सिद्धयोगा झील के माध्यम से!

गुरुदेव! क्या हमारा सौभाग्य ऐसा है ही नहीं? क्या हम इस जीवन में जन्म-मृत्यु से छुटकारा नहीं पा सकेंगे? क्या हम जीवन में वृद्धावस्था को परे नहीं धकेल सकेंगे? क्या हम इस जीवन में रोग रहित नहीं बन सकेंगे? यह कैसे होगा?

यह तभी सम्भव है, जब हम, आप जिस हीरक खण्ड पर बैठे हों, दूर से ही सही, आपको निहार लें, आपका उन्नत, उभरा हुआ वक्षस्थल निहारें, उसके ऊपर जो रोम राशि है, उसको देख कर आंखें धन्य हो सकें, आपकी लम्बी जटाओं में जो अपूर्वता है, उसको अनुभव कर सकें, आपके सारे शरीर में जो पुरुषोचित सौन्दर्य है, उसको अपनी आंखों में उतार सकें।

हे गुरुदेव! यह तभी सम्भव है, जब हम सिद्धाश्रम जा सकेंगे। यह तभी सम्भव है, जब आपकी कृपा हो सकेगी। यह तभी सम्भव है, जब हम आपकी आज्ञा मान सकेंगे। यह तभी सम्भव है, जब तन, मन, धन को पूर्ण रूप से आपके ऊपर न्यौछावर कर सकेंगे। यह तभी सम्भव है, जब आपकी कृपा हम पर हो सकेगी। यह तभी सम्भव है, जब आप हमारे ऊपर से माया का पर्दा हटा सकेंगे।

प्रभु! अब इस माया को हटा दीजिए। गुरुदेव! अब हमें ब्रह्म से साक्षात्कार करा दीजिए। प्रभु! हमें ब्रह्ममय बना दीजिए। प्रभु! हमें शिष्य बना लीजिए। हे गुरुवर! हमें अपने साथ सिद्धाश्रम ले जाइये। हे शिष्याधिपति! हमें सिद्धयोगा झील के किनारे बिठाइये। एक बार हम उसमें अवगाहन करना चाहते हैं, सिद्धाश्रम देखना चाहते हैं। आपकी कृपा कटाक्ष, आपकी कृपा वृष्टि हम अपने ऊपर चाहते हैं। आप ऐसा करें, यही बारम्बार आपसे प्रार्थना है, आपके प्रति नमन है, यही चिन्तन है, यही विचार है।

जरा मरण रहित

न मृत्यु न पुनर्जन्म न रोगो न वार्धिक्य च।
चिर यौवन सौन्दर्य कामोरति समोदृशः।।

सिद्धाश्रम में मृत्यु जैसी कोई चीज़ है ही नहीं, क्योंकि वहां यमराज का प्रवेश काल के रूप में वर्जित है। वहां पुष्प कुम्हलाते नहीं, वहां पत्तियां मुरझाती नहीं, वे देव पुष्प निरन्तर खिले हुए, सुगन्ध युक्त बने रहते हैं। वहां मनुष्य को मृत्यु व्याप्त नहीं हो पाती, वहां मनुष्य के शरीर में रोग सम्भव ही नहीं है। वहां जो एक बार प्रवेश कर जाता है, वह जन्म-मरण से छुटकारा पा लेता है, जो एक बार पांव रख देता है, वह सभी रोगों से रहित हो जाता है, जो एक बार सिद्धाश्रम को देख लेता है, वह जीवन में पूर्णता प्राप्त कर लेता है और फिर इस मल-मूत्र भरी देह से जन्म लेने की आवश्यकता नहीं रहती।

वहां पर चिर यौवन ही बना रहता है, चाहे पुरुष हो या चाहे स्त्री हो। ऐसा लगता है, कि जैसे उम्र छिटक गई हो, ऐसा लगता है, कि जैसे सारी बााएं, चिन्ताएं, कठिनाइयां और समस्याएं एक तरफ ढकेल दी गई हों, ऐसा लगता है, कि जैसे बुढ़ापे को लात मार कर फेंक दिया गया हो, ऐसा लगता है, कि जैसे मृत्यु का गला घोंट दिया गया हो, ऐसा लगता है, कि जैसे समस्त प्रकार के तनाव समाप्त हो गए हों, ऐसा लगता है, कि जैसे जीवन की आधि और व्याधि, रोग और शोक, दुःख और दारिद्रय, कष्ट और पीड़ा हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त हो गए हों . . . और ऐसा हो ही जाता है।

जीवन तो वह है, जो रोग रहित हो, जीवन तो वह है, जो चिर यौवनमय हो, जीवन तो वह है, जो यौवन के उद्दाम वेग से उफनता हुआ हो, जीवन तो वह है, जो सौन्दर्य का आगार हो, जीवन तो वह है, जो पुरुषोचित, व्याघ्रवत्, तेजस्विता युक्त शरीर हो। जहां कोमल पुष्प से भी कमनीय काया लिये हुए स्त्रियां हों, अप्सराएं हों, किन्नरियां हों, जहां पग-पग पर कामदेव का निवास है, जहां पग-पग पर रति अठखेलियां कर रही हो, वहां सौन्दर्य की कमी कैसे रह सकती है? क्योंकि कामदेव का साथ होना ही अपने आपमें पूर्ण

सौन्दर्य प्राप्त करना है, रति को अपने अन्दर उतार लेना ही पूर्ण स्त्रियोचित सौन्दर्य व यौवन को प्राप्त कर लेना है।

सिद्धयोगा झील में स्नान करते ही उसका सारा शरीर एक गुलाब के पुष्प से भी हल्का हो जाता है, समुद्र से भी ज्यादा उफनता हुआ वक्षस्थल बन जाता है, झील से भी गहरी उसकी आंखें बन जाती हैं, और निर्झर की तरह उसके बाल पीठ पीछे लहराने लग जाते हैं, ऐसी कमर बन जाती है, जो एक मुट्ठी में ली जा सके, ऐसा उदर बन जाता है, कि जिसे देख कर लगता है, कि सारा सौन्दर्य सिमट कर वहां खड़ा हो गया हो, कुचद्वय ऐसे बन जाते हैं, जैसे दो हंस आकाश में उड़ रहे हों और पूरा शरीर ऐसा बन जाता है, कि जैसे सांचे में ढला हुआ हो और विधाता ने बहुत धीरे-धीरे परिश्रम करके बनाया हो, जिसकी तुलना नहीं है, जिसकी समानता नहीं है।

—क्या हम साधक और शिष्य अभागे नहीं हैं? न्यून नहीं हैं? क्षीण नहीं हैं? भाग्यहीन नहीं हैं?

—यह हमारी भाग्यहीनता कब तक रहेगी गुरुदेव! यह हमारी न्यूनता कब तक हमें बरबाद करती रहेगी?

—यह माया हमें कब तक समाप्त करती रहेगी? ये आंखें कब तक इस गन्दगी को देखती रहेंगी?

—यह शरीर कब तक मल-मूत्र से वेष्टित रहेगा? ऐसे शरीर को ढोना और उसे श्मशान में ले जा कर पटक देना ही क्या जीवन है?

—क्या क्षणिक सुख को ही जीवन का आनन्द कहा जा सकता है?

—नहीं गुरुदेव! यह जीवन नहीं है। यह एक आत्म प्रवंचना है, एक छल है, अपने आप के प्रति एक धोखा है, अपने आपको गुमराह करने की क्रिया है।

—परन्तु और कोई चारा भी नहीं है, और कोई रास्ता भी नहीं है, केवल एक ही रास्ता बचा हुआ है, हमारे पास केवल एक ही पगडण्डी है, जिस पगडण्डी पर आप आ रहे हैं और हमारे पास में से गुजर रहे हैं . . .

—और वह क्षण आ जाये, कि आप पास में हों और हम आपके चरण पकड़ लें और जो हम श्मशान की ओर बढ़ रहे हैं, मुड़ करके वापिस

'मृत्योर्माऽमृतं गमय' मृत्यु से अमृत्यु की ओर गतिशील हो जायें।

ऐसा सिद्धाश्रम, जो जरा-मरण से रहित है, ऐसा सिद्धाश्रम, जो पूरे ब्रह्माण्ड में और कहीं है ही नहीं, ऐसा सिद्धाश्रम, जहां पग-पग पर यौवन और सौन्दर्य है, ऐसा सिद्धाश्रम, जो तपस्या के तेजपुञ्ज से आच्छादित है, ऐसा सिद्धाश्रम, जहां ऋषि, मुनि, योगी, यति, संन्यासी निरन्तर विचरण करते रहते हैं, ऐसा सिद्धाश्रम, जिसे देखने के लिए देवता भी तरसते हैं, ऐसा सिद्धाश्रम, जहां अप्सराएं नृत्य करती ही रहती हैं और ऐसा सिद्धाश्रम, जहां साक्षात् भगवत् स्वरूप लाखों वर्षों की आयु प्राप्त परमहंस स्वामी सच्चिदानन्द जी हैं, जो आपके गुरुदेव हैं, जिनके दर्शन देवताओं को भी दुर्लभ हैं, हमें वहीं ले चलिए।

अब एक क्षण के लिए हम यहां नहीं रहना चाहते, अब एक क्षण के लिए भी हम सांस लेना नहीं चाहते, इस हवा में जहर है, इस हवा में एक विषैलापन है, इस हवा में धोखा है, छल है, कपट है, झूठ है, धूर्तता है, मक्कारी है, असत्य है, व्यभिचार है और वह हमारे शरीर में प्रवेश कर पूरे शरीर को गंदला बना रहा है। इनसे छुटकारा कौन दिलायेगा? इनसे हम परे कब हट सकेंगे? यह हमारे वश की तो बात नहीं है, क्योंकि हमारी कई-कई पीढ़ियां इस विषैले वातावरण में समाप्त हो गईं और वे कुछ नहीं कर सकीं, क्योंकि उनके पास आप जैसा समर्थ गुरु नहीं था।

पर हमारा यह सौभाग्य है, हमारी पीढ़ी का यह सौभाग्य है, इस शताब्दी का यह सौभाग्य है, कि आप जैसा समर्थ गुरु इस पृथ्वी तल पर विद्यमान है। न मालूम, कब आप सिद्धाश्रम चले जायें? न मालूम, कब आपकी इच्छा हो और आप हमें छोड़ दें?

— और छोड़ देंगे, तो हमारे पास आंसू होंगे, रुदन होगा, पश्चाताप होगा, वेदना होगी, दुःख होगा और हम तेजस्विता से च्युत हो जायेंगे, पश्चाताप के अलावा कुछ नहीं रहेगा, सामने मृत्यु मुंह बाये खड़ी होगी, एक तरफ वृद्धावस्था अपने में लपेटने के लिए आतुर होगी, यमराज कालदण्ड लिए हुए भीषण अट्टाहास कर रहा होगा और हम कांप रहे होंगे। यह सोच-सोच कर ही सारा शरीर थर्रा उठता है।

फिर भी एक सम्बल है, एक आत्म विश्वास है, कि आप हैं और यह आत्म विश्वास ही हमारे जीवन का सम्बल है।

प्रभु! बहुत हो चुका, आपने बहुत माया फैला दी, आप बहुत अठखेलियां कर चुके, बहुत भ्रमित कर चुके, अब इस भ्रम को हटाइये, अब हमें तेजस्विता की ओर ले जाइये, हमें पूर्णता दीजिए, हमें श्रेष्ठता दीजिए, हमें सिद्धाश्रम ले जाइये, केवल इतनी इच्छा है और यही इच्छा है, कि हम सिद्धाश्रम को अपनी आंखों से देख सकें, वहां जा सकें, वहां से आ सकें और अपने जीवन को पूर्णता, दिव्यता और तेजस्विता दे सकें।

सिद्धाश्रम का सौन्दर्य

न रात्रि अंन्धकारश्च सुखदः लालिमा दियत्।
पुष्प पल्लव हरितत्व नैव सौन्दर्य कथ्यते।।

गुरुदेव! जो कुछ ऋषियों, मुनियों, योगियों, यतियों से सुना है, पढ़ा है, वह तो अपने आपमें मादकता भरे शब्द हैं, कि सिद्धाश्रम ऐसा स्थल है, जहां न रात्रि है, न दिन है, न अन्धकार है, हर क्षण ही समा है, ऐसा ही वातावरण है, जैसे प्रभातकालीन सूर्य के उगते समय हमें कुछ क्षणों के लिए दिखाई देता है, एक सुखद शीतलता, एक सुखद वातावरण, एक सुखद एहसास, एक सुखदायक तेजस्विता। जहां सूर्य होंते हुए भी दाहकता नहीं है, ज़हां चन्द्रमा अपनी पूर्ण शीतलता के साथ उपस्थित होता है, जहां सर्वत्र लालिमा ही लालिमा है, जहां वायु सुगन्ध को लिये हुए विचरण करती रहती है, जहां चारों तरफ एक अद्‌भुत सौन्दर्य है। एक तरफ दृष्टि डालते हैं, तो एक सौन्दर्य दिखाई देता है और दूसरी तरफ दृष्टि डालते हैं, तो प्रकृति का दूसरा सौन्दर्य दिखाई देता है, जिधर भी दृष्टि डालते हैं, प्रकृति प्रत्येक तरफ, प्रतिक्षण सौन्दर्य परिवर्तित करती ही रहती है। एक क्षण एक स्थान पर देखने पर जो सौन्दर्य दिखाई देता है, उसी स्थान पर दूसरे ही क्षण दूसरा ही सौन्दर्य दिखाई देता है और प्रकृति पल-पल अपना रूप परिवर्तित करती रहती है। ज्ञात ही नहीं होता, कि प्रकृति कितनी बार अपना शृंगार करती है, पुष्प कितनी बार अपना शृंगार करते हैं, हवा कितनी बार अपने आपको मादकता से युक्त बनाती है, कितनी बार पत्ते नवीनता लेते हैं, कितनी बार कल्पवृक्ष झूमता है, कितनी बार हिरण कुलांचे भरते हैं, कितनी बार मयूर नृत्य करते हैं और कितनी बार हंस अठखेलियां करते हैं, कुछ कहा नहीं जा सकता।

और फिर सिद्धयोगा झील, जिसकी तुलना ही नहीं है, हजारों-हजारों देवगंगाएं भी मिल कर जिसकी तुलना नहीं कर सकतीं, जिसके ओर-छोर का पता ही नहीं है, जिसकी गहराई को एहसास ही नहीं किया जा सकता, जिसका स्वच्छ जल अपने आपमें अमृत से भी बढ़ कर है, जिसके आसपास

हजारों-हजारों हीरक खण्ड बिखरे हुए हैं, जिन पर बैठ कर उन लहरों का नर्तन, उनकी अठखेलियां देखी जा सकती हैं। कहीं पर साधु, संन्यासियों की पर्णकुटियां हैं, जिसमें से यज्ञ की धूम निकलती रहती है। कहीं पर अप्सराएं नृत्य करती रहती हैं, कहीं पर गन्धर्व वाद्य यंत्र बजाते रहते हैं। कहीं भी जायें, कुछ न कुछ नवीनता प्रतीत होती ही रहती है।

ऐसा सौन्दर्य इस ब्रह्माण्ड में और कहीं भी सम्भव नहीं है, क्योंकि सुख शब्द तो बहुत छोटा सा शब्द है, आनन्द शब्द भी बहुत तुच्छ शब्द है। सिद्धाश्रम का वर्णन लेखनी के माध्यम से नहीं किया जा सकता। यदि पूरे समुद्र की स्याही बना दी जाय, यदि समस्त वृक्षों की लेखनी बना दी जाय और विधाता भी इस पृथ्वी पर सिद्धाश्रम का वर्णन लिखने के लिए बैठ जाये, तो वह भी हजारों-हजारों वर्षों तक उस सौन्दर्य का वर्णन नहीं लिख सकता।

जहां पुष्प झरते नहीं हैं, विकसित होते रहते हैं, जिनसे मादक सुगन्ध विकसित होती रहती है, जहां पर तितलियां अठखेलियां करती रहती हैं, जहां पर भौंरे गुञ्जरित होते रहते हैं, जहां पर पक्षियों की चहचहाहट सुनाई देती रहती है, जहां पर पत्तों में सुकोमलता और नवीनता व्याप्त होती रहती है, जहां हरीतिमा चारों तरफ दिखाई देती है, ऐसा लगता है, कि जैसे चारों तरफ सिद्धाश्रम में हरियाली का गलीचा बिछा दिया गया हो।

ऐसा सुखदायक दृश्य, ऐसा सुखदायक वातावरण, ऐसा सुखदायक सौन्दर्य हम लोगों के भाग्य में शायद नहीं है। हम तो मल-मूत्र से भरे हुए तुच्छ व्यक्तित्व हैं, जिनमें मांस है, रुधिर है, थूक है, लार है, मज्जा है, विष्टा है और इस शरीर में है भी क्या? ऐसा गंदला शरीर आपके चरणों में चढ़ाने के लायक भी नहीं है, क्योंकि आपके चरण इतने पवित्र और उदात्त हैं, कि मलिन देह रूपी पुष्प आपके चरणों में नहीं चढ़ाया जा सकता।

मगर हमारे पास इसके अलावा और कोई चारा भी नहीं है। जो कुछ हमारे पास है, वह तो यह शरीर है, जो कि गंदला है। यदि एक दिन भी स्नान नहीं करें, तो दूसरे दिन दुर्गन्ध आने लग जाती है।

ऐसे गन्दले शरीर से आपके चरणों को कैसे स्पर्श करें? कुम्हलाये हुए फूल को, मुरझाये हुए फूल को आपके चरणों में कैसे चढ़ायें? झूठ, धोखा

और छल से भरी हुई आंखें आपकी ओर कैसे निहार सकती हैं? पाप और धूर्तता से भरा हुआ यह शरीर आपको कैसे स्पर्श कर सकता है?

वास्तव में ही गुरुदेव! न आपका वर्णन किया जा सकता है, न सिद्धाश्रम का ही वर्णन किया जा सकता है। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं, दोनों एक-दूसरे के पर्याय हैं, आपके बिना सिद्धाश्रम अधूरा है, अपूर्ण है, न्यून है। उस सिद्धाश्रम के योगी, यति, अप्सराएं, किन्नरियां प्रतिक्षण आपके आने की प्रतीक्षा करते रहते हैं और जब आप वहां पहुंचते हैं, तो चारों तरफ एक उमंग, एक उल्लास, एक जोश बिखर जाता है, उल्लासमय वातावरण बन जाता है, सारी प्रकृति झूमने लग जाती है और ऐसा लगता है, जैसे उत्सव हो गया हो, एक दीपावली बन गई हो, ऐसा लगता है, कि जैसे बहुत कुछ बिखर गया हो, ऐसा लगता है, कि जैसे कामदेव एकदम से ठिठक गया हो, ऐसा लगता है, जैसे रति आपकी तरफ टुकुर-टुकुर ताकती रह गई हो, क्योंकि आपका व्यक्तित्व ही ऐसा है, आपका सौन्दर्य ही ऐसा है, आपकी तेजस्विता ही ऐसी है।

साथ ही साथ यह बात भी सत्य है, कि हम गृहस्थ शिष्य भी आपके ही शिष्य हैं, क्योंकि आपने ही हमारा निर्माण किया है। शायद कई-कई जन्मों से आपसे जुड़े हुए हैं और कोई न कोई क्षण ऐसा होना चाहिए, जब आप हमारी उंगली पकड़ कर हमें इस जरा-मरण से मुक्त कर दें, कोई तो क्षण ऐसा उपस्थित होना चाहिए, जब यह मल-मूत्र भरी देह प्राण तत्त्व में परिवर्तित हो जाये, कोई न कोई क्षण तो ऐसा होना चाहिए, जब हम आपकी उंगली पकड़ कर आपके साथ-साथ चल सकें, कोई न कोई क्षण तो ऐसा होना चाहिए, जब आप हमें सिद्धाश्रम ले जा सकें, कोई न कोई क्षण तो ऐसा होना चाहिए, जब हम सिद्धियों से सम्पन्न हो सकें, कोई न कोई क्षण तो ऐसा होना चाहिए, जब आपकी कृपा वृष्टि हम पर हो सके और कोई न कोई क्षण ऐसा होना चाहिए, जब पूर्ण रूप से हमारा शरीर आपमें निमग्न हो सके, पूर्णता प्राप्त कर सके, धन्य हो सके, दैदीप्यमान हो सके, चेतना युक्त बन सके।

मनुष्य देह

धिक् जीवन धिक् मनुष्याणां धिक् जप तप साधना यथा।
एकोहि कार्य हेतुत्व गुरु कृपा गमनो उतेत्।।

गुरुदेव! यह जीवन धिक्कारने योग्य है, क्योंकि इस जीवन में हमने कुछ किया ही नहीं है। इस जीवन में केवल स्वार्थ साधा, झूठ, छल, कपट, व्यभिचार किया, धोखा दिया, असत्य उच्चारण किया, जुबान को जला दिया, मुख को अपवित्र ही किया, शरीर को गंदला ही किया, आंखों को न्यूनता प्रदान कर दी और एक सामान्य घटिया व्यक्तित्व बन करके रह गए।

सही अर्थों में तो हम अपने आपको मनुष्य भी नहीं कह सकते, क्योंकि मनुष्य की जो परिभाषा है, उस कसौटी पर हम खरे नहीं उतरे हैं। हम इतने घटिया, इतने तुच्छ, इतने निम्न स्तर के हैं, कि आपके शरीर से परे हटते ही वापिस छल, झूठ, कपट हम पर आक्रमण कर बैठते हैं और हम उसमें लिप्त हो जाते हैं, हम वापिस आपको भुला डालते हैं, वापिस हम आपको माया से वेष्टित देख कर अपने आप में विचारने लग जाते हैं, फिर हमारे ऊपर बुद्धि प्रभावी हो जाती है, फिर हम न्यून हो जाते हैं, इसलिए हमारी यह मनुष्य देह धिक्कारने योग्य ही तो है।

गुरुदेव! हमारा जप धिक्कारने योग्य है, क्योंकि सही ढंग से हम मंत्र जप नहीं कर पा रहे हैं। हम तपस्या का ढोंग कर रहे हैं, तपस्या करनी हमें आती नहीं। हम अपने आपको गर्वित अनुभव कर रहे हैं, कि हम साधना कर रहे हैं, लेकिन हम साधना का अ, आ, इ, ई भी नहीं सीख पाये हैं। साधना क्या है और किस प्रकार की होती है — हम इसको समझ नहीं पाये हैं। समझ भी नहीं सकेंगे, क्योंकि आकाश को स्पर्श करना आसान नहीं है। ठीक उसी प्रकार से साधना में सिद्धियां प्राप्त करना सरल नहीं है। हम ये जो कुछ कर रहे हैं, यह एक ढोंग है, अपने आपसे छल है, भ्रम है, अपने आपको धोखा देना है।

'एकोहि कार्य' हमारा एक ही कार्य है, एक ही हेतु है, एक ही इच्छा है, एक ही विचार है, एक ही चिन्तन है, एक ही धारणा है, एक ही ध्यान है

और एक ही कार्य है, कि हम आपकी कृपा प्राप्त करें, आपको प्रसन्न कर सकें, शरीर दे करके, धन दे करके, जीवन दे करके, सर्वस्व दे करके भी यदि हम आपको पा सके, तो बहुत ही फायदे में रहे।

हम जीवन में धन्य हो सकेंगे, यह मनुष्य जीवन पूर्णता प्राप्त कर सकेगा, मां सही अर्थों में हमें श्रेष्ठ पुत्र कह कर पुकार सकेगी, उसका मातृत्व धन्य हो सकेगा, हमारी कई-कई पीढ़ियां हम पर पुष्प वर्षा करेंगी, एहसास करेंगी, कि हमारे ही कुल के एक व्यक्ति ने गुरुदेव जैसे विराट व्यक्तित्व की शिष्यता पूर्णता के साथ प्राप्त की।

हम इस प्रकार से घिसट-घिसट कर, तड़प-तड़प कर मरना नहीं चाहते, हम यमराज की दाढ़ों में फंसना नहीं चाहते, हम मृत्यु के शिकंजे में कसना नहीं चाहते, हम मौत के झपट्टे में आना नहीं चाहते, हम चिता पर लेट कर समाप्त नहीं होना चाहते, हम अग्नि में जल कर राख नहीं बनना चाहते, हम तो सही अर्थों में जीवित रहना चाहते हैं, शाश्वत, चिरन्तन . . . और यह आपकी कृपा से ही तो सम्भव है, आपकी करुणार्द्र दृष्टि से ही तो सम्भव है, आपकी इच्छा से ही तो सम्भव है, आपके चिन्तन से ही सम्भव है। जिस क्षण आप सोच लेंगे, उस क्षण सब कुछ प्राप्त हो जायेगा, सब कुछ बदल जायेगा, जीवन संवर जायेगा।

प्रभु! मैं कुछ भी नहीं कह पा रहा, कुछ भी कहना सम्भव नहीं रहा, केवल इतना ही कह सकता हूं, कि आप हमारे हो जाइये, इतना ही कहना चाहता हूं, कि मेरा सर्वस्व आपके ही चरणों में न्यौछावर है, इतना ही कहना चाहता हूं, कि आपके सिवा इस संसार में कोई भी मेरा नहीं है, मैं अकेला, अनाथ, दुर्बल, दुःखी, रोगी, जरा-मरण से भयभीत आपके सामने असहाय सा खड़ा हूं और दीक्षा के लिए प्रार्थना कर रहा हूं, विगलित कंठ से, आंखों में आंसू भर करके, कि आप हमारे ऊपर कृपा करें, हमें सिद्धाश्रम ले जायें, अपने सीने से भींच लें, अपने दिल से लगा दें, अपने होंठों से हमें शिष्य कह दें, हमारे ऊपर स्नेह वर्षा करें और हम जीवन में धन्यता अनुभव करते हुए सिद्धाश्रम में जा सकें, यही इच्छा है, यही आकांक्षा है।

और मुझे विश्वास है, कि मेरा विश्वास टूटेगा नहीं, मेरा विश्वास

डिगेगा नहीं, मेरा विश्वास क्षरण नहीं होगा, मेरा विश्वास पूर्ण होगा और मैं निश्चय ही आपका बन सकूंगा, आपकी कृपा प्राप्त कर सकूंगा, ऐसा मुझे विश्वास है, ऐसी ही आपसे प्रार्थना है। चारों तरफ प्रकृति चिल्ला-चिल्ला कर, चीख-चीख कर यही कह रही है, कि गुरुदेव के चरणों में समर्पित हो जाओ, गुरुदेव की चरण रज अपने सिर पर लगा लो, गुरुदेव से एकाकार हो जाओ, अपना सब कुछ गुरुदेव के चरणों में न्यौछावर कर दो, गुरुदेव को समझ लो, उनके विराट व्यक्तित्व को अपनी आंखों से देख लो और गुरुदेव में अपने आपको लीन कर दो। हम यह सुन रहे हैं और हम ऐसा ही करना चाहते हैं, ऐसा ही बनना चाहते हैं, ऐसा ही होना चाहते हैं।

गुरुदेव! अब विलम्ब मत करिये। एक क्षण का भी विलम्ब अब सह्य नहीं है। पल-पल बहुत भारी होता जा रहा है। आप हमें अपनी गोद में, अपने सीने में स्थापित कर दें और आप पूर्ण रूप से हमारे अन्दर स्थापित हो जायें, मेरा अस्तित्व समाप्त हो जाये और मैं आपमें लीन हो जाऊं, ऐसी ही इच्छा है, ऐसी ही आकांक्षा है।

गुरु मूर्ति सदा ध्यायेत गुरु मंत्र सदा जपेत

. . . शिष्य के जीवन की पूर्णता ही नहीं उसके जीवन का प्रारम्भ भी होता है – गुरु ! तो क्यों न प्रत्येक दिवस प्रारम्भ हो गुरुदेव के पुण्य स्मरण से . . . इसी चेतना को जाग्रत करने, स्पष्ट करने व शिष्य के जीवन में उतार देने हेतु ही तो सृजित की गई है ये कृतियां . . .

तांत्रोक्त गुरु पूजन

अपने हृदय में गुरु स्थापन करना समस्त देवताओं कि स्थापन करने से ज्यादा महत्वपूर्ण है। ऋग्वेद और एक सामान्य व्यक्ति किस प्रकार से गुरु को अपने हृदय में स्थापित कर अपने जीवन में स्थापित कर सकता है, प्रस्तुत ग्रंथ में वैदिक, तांत्रोक्त, तिब्बती तथा अन्य विधियों से गुरु को जीवन में समाहितिकरण की क्रिया की गई है। *न्यौछावर 30/-*

दैनिक साधना विधि

व्यक्ति किस प्रकार से नित्य पूजन कर्म करें, साधनामय दिशा की ओर कौन सी पूजन विधि प्रातः काल के लिए उपयोगी है, श्रेष्ठतम है, इसी विधान सहित प्रस्तुत किया गया है इसमें . . . *न्यौछावर 30/-*

ज्योतिष और काल निर्णय

समय के सूक्ष्म से सूक्ष्म प्रभाव को ज्ञात किया जा सकता है और उसके अनुसार कार्य की सफलता को निश्चित किया जा सकता है . . . वराहमिहिर के ही ग्रंथ को आधार बनाकर रचित किया गया है यह ग्रंथ

न्यौछावर 150/-

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर फोन : 0291-432209, फैक्स : 0291-432010

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली फोन : 011-7182248, फैक्स : 011-7196700

साधक जीवन का लक्ष्य

सिद्धाश्रम

जीवन का सौन्दर्य सिद्धाश्रम है, जीवन की पूर्णता सिद्धाश्रम है, मल-मूत्र भरी देह को संजीवन कर देने की क्रिया सिद्धाश्रम है, इस मृतवत् शरीर को चैतन्यता और पूर्णता देने का प्रयास सिद्धाश्रम है, अन्नमय कोश से प्राणमय कोश में छलांग लगाने की क्रिया सिद्धाश्रम है।

हजारों-हजारों वर्षों की तपस्या-साधना करके भी साधु, योगी, संन्यासी सिद्धाश्रम नहीं पहुंच सके, उन्होंने सैकड़ों-हजारों पुस्तकों का अध्ययन कर लिया, साधनाओं को समाविष्ट कर लिया, सिद्धियों को हस्तगत कर लिया, इसके बाद भी सिद्धाश्रम की प्राप्ति दुर्लभ रही, वे वहां नहीं पहुंच पाये और जीवन में कसक रह गई, एक न्यूनता रह गई, एक कमी रह गई, कि काश! हम सिद्धाश्रम पहुंच पाते, उस दिव्य भूमि के दर्शन कर पाते, जहां कृष्ण हैं, राम आदि हैं और परमहंस स्वामी सच्चिदानन्द जी हैं।

पहली बार इस पुस्तक में उन तथ्यों का समावेश किया गया है, जिनके माध्यम से व्यक्ति आसानी से सिद्धाश्रम पहुंच सकता है, अपनी आंखों से देख सकता है, अपने शरीर को सूक्ष्म बना सकता है और उस सिद्धाश्रम में विचरण कर सकता है, जहां अप्सराएं हैं, जहां गन्धर्व हैं, जहां कल्पवृक्ष है, जहां कामधेनु है, जहां हजारों-हजारों वर्षों की आयु प्राप्त योगी व संन्यासी हैं, जहां की मिट्टी चन्दन के समान है, जहां की वायु रोग रहित है, जहां की सिद्धयोगा झील वृद्धावस्था को यौवनावस्था में परिवर्तित कर देने की क्रिया से युक्त है, जहां मृत्यु, जरा, रोग, भय, कष्ट, पीड़ा, बाधा, समस्याएं और अड़चनें नहीं हैं, ऐसे अद्वितीय स्थल पर पहुंचने और उसे प्राप्त करने का सफल प्रयास इस पुस्तक में संजोया गया है। इस दृष्टि से यह पहला ऐसा ग्रंथ है, जो इस विषय पर अनूठा है, अचरज भरा है, अप्रतिमेय है और हृदय में उतार देने लायक है।